रजिस्ट्री सं० डी--(डीएन)---128/89

REGISTERED No. D-(DN)--128/89

2579/89

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 13] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 1, 1989 (चैत्र 11, 1911)
No. 13] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 1, 1989 (CHAITRA 11, 1911)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय--सूची

	पृष्ठ
भाग I--खण्ड 1---रक्षा मंत्रालय को छोड़कर भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	281
भाग I--खण्ड 2--(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं . .	321
भाग I--खण्ड 3--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं . . .	*
भाग I--खण्ड 4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों, आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	393
भाग II--खण्ड 1--अधिनियम, अध्यादेश और विनियम .	*
भाग II--खण्ड 1-क--अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II--खण्ड 2--विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट . .	*
भाग II--खण्ड 3--उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II--खण्ड 3--उप-खण्ड (ii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं . . .	*
भाग II--खण्ड 3--उप-खण्ड (iii) भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी अधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं) .	*
भाग II--खण्ड 4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश . .	*
भाग III--खण्ड 1---उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं . . .	273
भाग III--खण्ड 2--पेटेन्ट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	317
भाग III--खण्ड 3--मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .	*
भाग III--खण्ड 4--विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं .	329
भाग IV--गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस . .	39
भाग V--अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दिखाने वाला अनुपूरक	

*पृष्ठ संख्या प्राप्त नहीं हुई है।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court.	281
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than oth Ministry of Defence) and by the Supreme Court	321
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . . .	*
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	393
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . . .	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) .	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administration of Union Territories) . . .	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence . .	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	273
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	317
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	329
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies .	39
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folio Nos. not received.

भाग I—खण्ड 1
[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 मार्च 1989

सं० 18-प्रेज/89—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. मास्टर सौरभ ओबेराय (मरणोपरान्त)
पुत्र मेजर एस० के० ओबेराय,
84, आर्मर्ड रेजिमेंट,
द्वारा 56 ए०पी०ओ० ।

18 जनवरी, 1987 को दिन में लगभग 11.00 बजे चार बच्चे नामत: मास्टर शान्तनु ओबेराय (10 वर्ष), मास्टर सौरभ ओबेराय (8 वर्ष), मास्टर अंकुर खुराना (9 वर्ष) तथा कुमारी आस्था खुराना (6 वर्ष) मामुथानी सैनिक क्षेत्र में स्थित 20-25 फुट गहरी झील के पास खेल रहे थे । इनमें से कोई भी बच्चा तैरना नहीं जानता था । कुमारी आस्था खुराना अचानक फिसल गई और तालाब में जा गिरी और डूबने लगी । यह देखकर मास्टर सौरभ ओबेराय उसे बचाने के लिए तालाब में कूद पड़ा, परन्तु वह स्वयं भी डूबने लगा । उन्हें डूबता देखकर कुमारी आस्था खुराना का बड़ा भाई मास्टर अंकुर खुराना भी तालाब में कूद पड़ा । वह उन दोनों को किनारे तक ले आया परन्तु उन्हें बाहर नहीं ला सका क्योंकि किनारा ऊंचा तथा फिसलन वाला था । अंकुर खुराना संघर्ष कर रहा था तभी मास्टर शान्तनु ने, जो तालाब के किनारे सहायता के लिए पुकार रहा था, एक पेड़ की टहनी के सहारे से उसकी सहायता की । पास से गुजर रहे एक सन्तरी ने चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनी और वह दौड़कर घटनास्थल पर आ पहुंचा और वह तीनों बच्चों को बाहर निकाल लाया, परन्तु उस समय तक कुमारी आस्था खुराना और मास्टर सौरभ ओबेराय मर चुके थे ।

मास्टर सौरभ ओबेराय ने डूबती हुई लड़की के जीवन को बचाने के प्रयास में अदम्य साहस का परिचय दिया और ऐसा करते हुए अपनी जान की बाजी लगा दी ।

2. श्री जय प्रकाश उर्फ सुक्के,
ग्राम दुहई,
थाना मुरादनगर,
जिला गाजियाबाद (उ० प्र०) ।

1 जनवरी, 1987 को सांय लगभग 6.00 बजे करीब 14 वर्षीय मास्टर विनोद साइकिल चला रहा था जिसके साथ दो वर्ष का बच्चा आगे बैठा हुआ था । जब साइकिल एक ऐसे कुंए के निकट पहुंची, जिसके चारों ओर कोई चबूतरा नहीं था, अचानक एक बच्चा साइकिल के आगे आ गया । उस बच्चे को बचाने की कोशिश में मास्टर विनोद ने अपना सन्तुलन खो दिया और साइकिल में बैठे बच्चे के साथ कुंए में जा गिरा । कई व्यक्ति घटनास्थल पर एकत्र हो गए परन्तु उन्हें बचाने के लिए कुंए में कूदने का साहस किसी को भी न हो सका । यह देखकर श्री जय प्रकाश उर्फ सुक्के ने कुंए में छलांग लगा दी और दोनों लड़कों को बचा लिया ।

श्री जय प्रकाश उर्फ सुक्के ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए डूबने से दो व्यक्तियों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस तथा तत्परता का परिचय दिया ।

3. श्री भगवान दास गौतम (मरणोपरान्त)
ग्राम तथा डाकघर बिजौली,
थाना खरखोदा,
जिला मेरठ (उ० प्र०) ।

12 अप्रैल, 1982 को जिला मेरठ के जहीदपुर में श्री मुन्शी लाल होरीलाल तथा उनका 14 वर्ष का लड़का मास्टर देवेन्द्र कुमार पेट्रोल के बिखरने से फैली हुई आग की लपटों में घिर गए । श्री भगवान दास गौतम, जो उस रास्ते से गुजर रहे थे, ने इस कारुणिक दृश्य को देखा और अपने जीवन की तनिक भी परवाह न करते हुए आग की लपटों में कूद पड़े और दोनों व्यक्तियों को आग से बाहर निकाल लाए । परन्तु, इस कार्यवाही में वे स्वयं भी बहुत बुरी तरह से जल गए जिससे अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई ।

श्री भगवान दास गौतम ने उच्च कोटि के साहस तथा मानव जीवन के प्रति अगाध लगाव का परिचय दिया और पेट्रोल की आग में फंसे दो अनजान व्यक्तियों की जान बचाने में अपने जीवन का बलिदान कर दिया ।

सं० 19-प्रेज/89—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "उत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री भूपिन्दर सिंह,
द्वारा क्षेत्रीय प्रबन्धक,
हिमाचल सड़क परिवहन निगम,
कुल्लू (हिमाचल प्रदेश) ।

14 अक्तूबर, 1986 को हिमाचल सड़क परिवहन निगम के एक चालक श्री भूपिन्दर सिंह बस नं० एच०आई०ई० 896 से हरिद्वार-मनाली मार्ग पर यात्रा कर रहे थे । बस पूरी तरह से यात्रियों से भरी हुई थी । बस के चालक को जबरदस्त दिल का दौरा पड़ा और चलती बस में ही स्टीयरिंग पर उसकी मौत हो गई । श्री भूपिन्दर सिंह ने, जो चालक के पीछे बैठे थे फौरन बस को संभाल लिया और इस प्रकार एक घातक दुर्घटना होने से बच गयी ।

4 मई, 1987 की मध्यरात्रि में जब श्री भूपिन्दर सिंह 50 सवारियों से भरी बस नं० 589 (मनाली-हरिद्वार सेवा) चला रहे थे तब उस बस पर ढेरा बस्सी (पंजाब) के निकट आतंकवादियों ने बार-बार गोलियां चलाईं । श्री भूपिन्दर सिंह ने असाधारण साहस तथा सूझबूझ का परिचय दिया और इस तथ्य के बावजूद कि आगे-पीछे के हवा रोधक शीशों तथा बस के मध्य भाग पर कई गोलियां लग चुकी थीं और एक गोली उनके सिर के ऊपर से भी गुजर गई थी, उन्होंने बस नहीं रोकी और अन्तत: बस को आतंकवादियों की गिरफ्त से बाहर निकाल ले गए ।

श्री भूपिन्दर सिंह ने दोनों अवसरों पर असाधारण सूझबूझ तथा साहस का परिचय देकर यात्रियों की जान बचाई ।

2 श्री राम बहादुर,
ग्राम-समोडी, डाकखाना बैनजत्था,
तहसील घुमारविन, जिला बिलासपुर,
हिमाचल प्रदेश ।

26 अगस्त, 1986 को रात्रि के लगभग रात 8.30 बजे बिलासपुर की गोविन्द सागर झील में एक पेडल नौका उलट गई और डूबने लगी । नौका में

सवार यात्रियों ने चीखना चिल्लाना शुरू कर दिया। चीख-पुकार सुन कर हिमाचल प्रदेश नेवल एन० सी० सी० यूनिट के एक नाविक, श्री राम बहादुर जो पास ही गुगुनु घाट पर ड्यूटी पर थे, तत्काल घटनास्थल पर पहुंचे। यद्यपि, घाट पर कई असैनिक थे परन्तु उनमें से कोई भी सहायता के लिए आगे नहीं आया। तब उन्होंने एक नेवल नौका ली और उस स्थान की ओर बढ़ चले जहां उस अभागी नौका के सभी यात्री झील की सतह तक डूब गए थे। अपने जीवन के गंभीर खतरे की परवाह किए बिना उन्होंने झील की सतह पर दो बार गोते लगाए और 7 व्यक्तियों को अर्धचेतन अवस्था में बाहर ले आए। उन्होंने नौका के भीतर पीड़ितों का प्राथमिक उपचार किया और उन्हें किनारे पर ले आए।

श्री राम बहादुर ने सात व्यक्तियों के प्राणों की रक्षा करने में उत्कृष्ट साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

3. श्री एस० सुरेन्द्रन (मरणोपरान्त)
वारविला पुतन वीडू
पण्डिनिट्टा, थलवूर डाकखाना (वाया)
कुन्निकोड, क्वीलोन जिला
(केरल)

25 मार्च, 1987 को क्वीलोन जिले के पण्डिनिट्टा गांव में श्री के० श्रीधरन के शेड में जहां आतिशबाजी बनाने के लिए विस्फोटक सामग्रियां रखी थीं एक विस्फोट हुआ और शेड में आग लग गई। कुछ व्यक्ति जलते हुए शेड के अन्दर फंस गए, जो श्री श्रीधरन के घर के पास ही थी। दो श्रमिक घायल हो गए तथा दो अन्य अपने आप को बचाने के लिए वहां से भाग निकले।

श्री के० श्रीधरन का लड़का एस० सुरेन्द्रन, फील्ड एम्बुलेंस, द्वारा 56 ए० पी० ओ० जो छुट्टी पर आया हुआ था, ने स्थिति की गंभीरता को भांप लिया और घटना स्थल पर जा पहुंचा। उसने स्वयं के जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए, शेड में फंसे व्यक्तियों की जानें बचाने के लिए जलते हुए शेड के अन्दर प्रवेश किया। इससे वह अत्यधिक जल गया और उसने 28 मार्च, 1988 को दम तोड़ दिया।

4. श्री एस० लालजौला,
तुइपुई, दारजौकाई,
डाकखाना हनाहतियाल,
मिजोरम।

28 अप्रैल, 1987 को दोपहर लगभग एक बजे एक मारकोट जो कुछ औरों, कुछ स्थानीय महिलाओं, असम राइफल्स के कुछ जवानों तथा उनके परिवारों को ले जा रही थी, कालादन नदी के बीचों बीच उलट गई। श्री लालजौला ने जो उस समय वहीं थे एक सिपाही को नौका के प्लेट फार्म से कंधे पर बंधी अपनी राइफल सहित गिरते देखा। वे तत्काल ही पानी की ओर चल दिए जहां वह वहां खड़ी एक नौका को खोलकर उसे तेज धारा में उस आदमी की ओर खेने लगे। तब तक उस आदमी से उसकी राइफल भी निकल चुकी थी और वह पानी में संघर्ष कर रहा था क्योंकि उसे तैरना नहीं आता था। बड़ी कोशिशों के बाद वह उस डूबते हुए आदमी के पास पहुंचे और उसे पानी से बाहर निकाल लाए।

श्री लालजौला ने तब तक एक दूसरे आदमी को देखा जो मुश्किल से एक ओर को पकड़े हुए पानी के ऊपर तैर रहा था। वह तत्काल तैरकर उस तक पहुंचे और उसे भी बचा लिया। वह खोई हुई राइफल को भी ढूंढ़ निकालने में सफल हो गए। यह श्री एस० लालजौला के अत्यन्त साहसिक प्रयासों का ही परिणाम था कि उन्होंने अपनी जान को गंभीर खतरे में डाल कर दो व्यक्तियों को डूबने से बचा लिया।

5. स्वामी सर्वानन्द
राजकीय आश्रम
स्थान एवं डाकघर बौंदकलां
तहसील दादरी
जिला भिवानी (हरियाणा)।

14 अप्रैल, 1986 को हरिद्वार में कुम्भ मेले में, जहां पवित्र स्नान के लिए लगभग 50 से 70 लाख श्रद्धालु एकत्र हुए थे, भगदड़ मच गई जिसके परिणामस्वरूप कई व्यक्ति घायल हुए तथा कई जमीन पर गिर पड़े और भागते हुए व्यक्तियों के पांवों तले आ गए। स्वामी सर्वानन्द ने स्थिति की गंभीरता को भांप लिया और स्वयं अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना बचाव कार्य में जुट गए। उनके साहसी तथा दृढ़निश्चयी प्रयास भगदड़ में फंसे कई लोगों की जान बचाने में सहायक सिद्ध हुए और ऐसा करते हुए स्वयं भी बहुत बुरी तरह से घायल हो गए और जमीन पर गिर पड़े।

6. श्री कर्ण सिंह सैनी,
उर्फ कुंवर प्रसाद सैनी
निवासी मलियाना,
थाना सदर बाजार
मथुरा (उ० प्र०)।

22 जुलाई, 1986 को लगभग शाम चार बजे जमुना में गहादेव घाट पर स्नान कर रहे पांच लड़के डूबने लगे और सहायता के लिए चीख-पुकार करने लगे। श्री कर्ण सिंह सैनी उर्फ कुंवर प्रसाद सैनी ने जो पास ही अपनी गायों को चरा रहे थे, उनकी चीख-पुकार सुनी और अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए तुरन्त नदी में कूद पड़े। उन्होंने 5 में से 4 लड़कों को बचा लिया। दुर्भाग्यवश, एक लड़का डूब गया।

श्री कर्ण सिंह सैनी उर्फ कुंवर प्रसाद सैनी ने अपने जीवन के गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए चार लड़कों के प्राण बचाकर उदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

7. जे० सी०-125264, सूबेदार अजमेर सिंह,
14 सिक्ख लाइट इन्फेन्ट्री,
द्वारा 56 ए० पी० ओ०।

8 जुलाई, 1987 को सिक्ख लाइट इन्फेंट्री के 30 जवान सूबेदार अजमेर सिंह के नेतृत्व में हैदराबाद से मथुरा जंक्शन के लिए दिल्ली आने वाली दक्षिण एक्सप्रेस में सवार हुए। रास्ते में 9 जुलाई, 1987 को प्रातः लगभग साढ़े चार बजे एक जोर का धमाका सुनाई पड़ा और यात्री जाग गए। सूबेदार अजमेर सिंह यह जानने के लिए बाहर आए कि क्या हुआ, और देखा कि अचानक तेज बाढ़ के कारण गाड़ी के आगे के कुछ कुछ डिब्बे पटरी से उतर कर पलट गए। वह तुरन्त ही अपने जवानों के साथ बचाव कार्य में जुट गए।

सूबेदार अजमेर सिंह ने तुरन्त ही अपने सब जवानों को इकट्ठा किया और उन्हें पटरी से उतरे और इधर-उधर बिखरे हुए डिब्बों के यात्रियों को बचाने के काम में जुट जाने को प्रेरित किया। वह खुद कीचड़ वाले पानी में जवानों के साथ एक-एक डिब्बे में गए। तेज बहाव और अत्यधिक कठिन परिस्थितियों में बचाव कार्य किया। दो डिब्बे पटरी से लगभग 150 फुट दूर तक बह गए। इन डिब्बों से जिंदा बची एक मात्र 14 वर्षीय लड़की को डिब्बे की खिड़की की सलाखें तोड़कर निकाला गया।

सूबेदार अजमेर सिंह ने सभी विपरीत परिस्थितियों तथा खतरों में अपने जवानों को प्रेरित तथा सक्रिय किया और उनका नेतृत्व किया जिससे अवश्यम्भावी मौत के मुंह से 70 से अधिक व्यक्तियों के अमूल्य जीवन को बचाया जा सका।

8. जे० सी० 160615 नायब सूबेदार ईश्वर सिंह सेवाग
ए० ओ० सी० सेन्टर
सिकन्दराबाद।

8 जुलाई, 1987 को आर्मी आर्डनेंस कोर सेण्टर के नायब सूबेदार ईश्वर सिंह सेवाग 21 अप दक्षिण एक्सप्रेस से दिल्ली आ रहे थे। इस गाड़ी को रास्ते में 9 जुलाई, 1987 के प्रातः लगभग साढ़े चार बजे मंचेरियल के निकट दुर्घटना हो गई। उन्होंने गाड़ी में यात्रा कर रहे कुछ सैनिक कार्मिकों को इकट्ठा किया और बचाव कार्य में लग गए। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, अन्य लोगों की सहायता से लगभग 17 व्यक्तियों की जान बचाई और जलमग्न डिब्बों से करीब 25 शवों को बाहर निकाला। उन्होंने यह बचाव कार्य उस समय शुरू किया जब पानी गर्दन तक था और अत्यन्त वेग से बह रहा था। बचाए गए कुछ व्यक्तियों का प्राथमिक उपचार भी किया गया।

नायब सूबेदार ईश्वर सिंह सेवाग ने अपने जीवन के खतरे की अनदेखी करते हुए दुर्घटना में पीड़ित व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया ।

सं० 20 प्रेज/89--राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :

1. श्री रंगे सिंह (मरणोपरान्त)
ग्राम गिपुलिन, डाकखाना अनिनी,
दबांग घाटी जिला,
अरुणाचल प्रदेश ।

16 जून, 1987 को श्री रंगे सिंह तथा श्री रेको सिंह एक अन्य व्यक्ति अपने गांव के निकट नदी में मछली पकड़ रहे थे । श्री रेको सिंह दुर्घटनावश फिसल कर नदी में जा गिरे । अपने साथी को धारा में बहते देखकर श्री रंगे सिंह नदी में कूद पड़े और उसे बचा लिया । दुर्भाग्यवश, वह स्वयं पानी से बाहर नहीं आ सके तथा नदी की तेज धारा में बह गए ।

इस प्रकार श्री रंगे सिंह ने अपनी जान पर खेलकर अपने साथी की जान बचा ली ।

2. श्री चूड़ामणि सैकिया,
अपर कटनी गांव,
डाकखाना तथा थाना कमलाबेड़ि,
मंजुलि, जिला जोरहाट (असम) ।

18 अक्तूबर, 1985 को निमाटी घाट के पास कमलाबेड़ि निमाटी नौका से जाते समय एक नन्हा बालक अपनी मां की बाहों से निकलकर ब्रह्मपुत्र नदी में जा गिरा । श्री चूड़ामणि सैकिया जो उस नौका में थे झटपट नदी की तेज धारा में कूद पड़े और उन्होंने बच्चे को बचा लिया ।

श्री चूड़ामणि सैकिया ने अपनी जान के गम्भीर खतरे की परवाह न करते हुए एक डूबते हुए बच्चे की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया ।

3. मास्टर सुमीत,
6/5 विद्युत नगर,
हिसार, हरियाणा ।

2 फरवरी, 1985 को, एम० डी० पब्लिक स्कूल, नरवाना का एक सात वर्षीय विद्यार्थी मास्टर विवेक को, जो 4 फुट गहरे भूमिगत पानी के टैंक के निकट खेल रहा था, एक दूसरे बच्चे ने टैंक में धकेल दिया जिससे वह डूबने लगा । उसी स्कूल का छः वर्ष और 10 मास का एक अन्य विद्यार्थी सुमीत जो पास ही खेल रहा था, ने गिरते हुए बच्चे को देख लिया और वह उसे बचाने के लिए तुरन्त आगे बढ़ा । उसने अपने एक हाथ से पास लगी बाड़ को कसके पकड़ लिया और दूसरा हाथ टैंक के काफी अन्दर डाल दिया । इस तरह वह डूबते हुए बच्चे का हाथ पकड़ने में सफल हो गया और उसे टैंक से बाहर ले आया ।

इस प्रकार, 7 वर्ष से कम उम्र के बच्चे मास्टर सुमीत ने अपने जीवन को गंभीर खतरे में डालकर अपने मित्र की जान बचाई और अपने साथी विद्यार्थियों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया ।

4. श्री फरीद मोहम्मद,
मकान नं० 7, रौरा सैक्टर नं० 3,
जिला बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश) ।

4 सितम्बर, 1987 को श्री फरीद मोहम्मद ने गोविन्द सागर झील में डूब रहे 9 वर्षीय नदीम अख्तर तथा 10 वर्षीय साहिद अली की "बचाओ-बचाओ" की आवाजें सुनीं । वह तत्काल दौड़कर घटना-स्थल पर पहुंचा और देखा कि दोनों लड़के झील की तह तक नीचे चले गए थे । अपनी जान के खतरे की परवाह किए बिना श्री फरीद मोहम्मद ने झील की तह में कई बार गोता लगाया और दोनों बच्चों को पकड़ कर किनारे पर ले आया । उसने उन्हें प्राथमिक-चिकित्सा सहायता दी और इस प्रकार उनके अमूल्य जीवन की रक्षा की ।

श्री फरीद मोहम्मद ने अपनी जान के गम्भीर खतरे की परवाह किए बिना दो व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया ।

5. मास्टर सुधीर अरोड़ा,
मकान नं० 1232, सैक्टर 11,
सरकारी क्वार्टर, पंचकुला,
हरियाणा ।

13 जनवरी, 1986 को पंचकुला में दुर्घटनावश एक दो वर्षीय बालक मास्टर गौरव लोहड़ी मनाने के लिए बनाए गए अग्नि कुंड में गिर गया । क्षण भर में ही उसके कपड़ों को आग लग गई । यह देखकर मास्टर सुधीर अरोड़ा उसे बचाने के लिए दौड़ा और इस प्रयास में उसके अपने कपड़ों में भी आग लग गई । पास खड़े कुछ प्रौढ़ लोगों ने उनकी हालत देखी और उन्हें बचा लिया ।

मास्टर सुधीर अरोड़ा ने केवल 7 वर्ष की आयु में ही अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया तथा अपनी जान को गम्भीर खतरे में डालकर उस बच्चे की जान बचाने में सहायक सिद्ध हुआ ।

6. मास्टर मुज्जफर अली,
5 जी० तुलसी बाग,
श्रीनगर,
जम्मू एवं कश्मीर ।

26 मार्च, 1987 को सुबह 2 बजे एक ट्रक श्रीनगर--जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग पर लगभग 900 फुट नीचे खोणी नाले में लुढ़क गया । उस दिन भारी वर्षा हो रही थी । ट्रक ड्राइवर तथा क्लीनर के अतिरिक्त, एक महिला श्रीमती सारा तथा उसके दो बेटे मास्टर मुज्जफर अली और शौकत अली को चोटें आईं । चोट लगने के कारण क्लीनर की अस्पताल में मृत्यु हो गई । महिला और उसका छोटा बेटा शौकत अली गम्भीर रूप से घायल हुए तथा वे बेहोश हो गए ।

यद्यपि, 8 1/2 वर्षीय मास्टर मुज्जफर अली को भी गम्भीर चोटें आईं थी, लेकिन उसकी चेतना ने तेजी तथा बहादुरी से कार्य किया । उसने तुरन्त अपनी मां तथा छोटे भाई को एक झाड़ी के नीचे घसीटकर उन पर कम्बल डाल दिया । अपनी सूझ-बूझ से उसने मदद के लिए चीख-पुकार शुरू कर दी । छः घण्टों के अन्तराल के बाद 26 मार्च, 1987 की सुबह उसने पास रह रहे एक गूजर का ध्यानाकर्षित किया और उससे मदद मांगी । गूजर घायल महिला एवं उसके पुत्र को रामबाण अस्पताल ले गया जहां उनका इलाज किया गया तथा इस प्रकार दो व्यक्तियों का अमूल्य जीवन बचा लिया ।

मास्टर मुज्जफर अली ने अपनी मां तथा भाई को दुर्घटना से बचाने में अदम्य साहस, सूझबूझ तथा तत्परता का परिचय दिया ।

7. श्री हरकाबावी मथड़ा मंजूनाथ,
डोर नं० 24, तीसरा क्रास, पार्वती नगर,
बेलरी, कर्नाटक ।

1 सितम्बर, 1986 को दोपहर के लगभग 1.30 बजे श्री हरकाबावी मथड़ा मंजूनाथ ने, जो एक मोपेड पर अपने चचेरे भाई के साथ घर वापिस आ रहे थे, पास की एक नहर से किसी की मदद मांगने की आवाज सुनी । उन्होंने देखा कि कोई नहर में बहता जा रहा था । श्री मन्जूनाथ ने अपनी मोपेड रोक दी और बेझिझक नहर में कूद पड़े । वह नहर में तैरकर गए और डूबते हुए व्यक्ति को उसके बालों से पकड़ कर किनारे तक ले आए और अपने चचेरे भाई की सहायता से उसे ऊपर उठा लिया । वह व्यक्ति अचेत था तथा उसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी । श्री मन्जूनाथ ने उसे प्राथमिक-चिकित्सा दी तथा दो-तीन मिनट तक मुंह से मुंह मिलाकर उसे कृत्रिम सांस दी । आधे घंटे के बाद उस व्यक्ति को फिर से होश आ गया ।

श्री हरकाबावी मथड़ा मंजूनाथ ने अपने जीवन को खतरे में डालकर एक डूबते हुए व्यक्ति की जान बचाई और इस प्रकार उन्होंने सराहनीय साहस का परिचय दिया ।

8. श्री रामप्पा यमनप्पा गोदारा,
गांव और डाकघर रामथला,
हुंगुड तालुक, जिला बीजापुर,
(कर्नाटक)।

9. श्री संमू मुमू मणि,
गांव और डाकघर रामथला,
हुंगुंड तालुक, जिला बीजापुर,
(कर्नाटक)।

10. श्री शिवापुत्रप्पा भीमप्पा पोलिस,
गांव और डाकघर रामथला,
हुंगुंड तालुक, जिला बीजापुर
(कर्नाटक)।

16 दिसम्बर, 1987 को बेलगांव जिले में हुबीनहाली की 11 महिला श्रमिक माल्लप्रभा नदी, जिसमें कम पानी था, को पार करके अपने कार्यस्थल पर जा रही थीं। उस समय अचानक नदी में अप्रत्याशित बाढ़ आ गई जिसमें ये सभी महिलाएं बह गई। यह देखकर सर्वश्री रामप्पायमनप्पा गोदारा, संमू मुमू मणि तथा शिवापुत्रप्पा भीमप्पा पोलिस तुरन्त नदी में कूद पड़े तथा 7 महिलाओं महिलाओं को बचा लिया। उन्होंने अपने प्राणों को खतरे में डालकर डूबती हुई 7 महिलाओं की जान बचाकर अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

11. श्री रामदास पाण्डूरंग राम पै,
हुलेकल-581336, सिरसी तालुक,
जिला उत्तर कन्नड़।

8 मार्च, 1986 को, हुलेकल गांव के श्री रामदास पाण्डूरंग राम पै, ने जो महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर बनवासी में मधुकेश्वरा मन्दिर जा रहे थे थे, तीन महिलाओं को वर्दा नदी के किनारे स्नान करते हुए देखा। दुर्भाग्यवश, उनमें से एक महिला फिसलकर बाढ़ आई हुई नदी में जा गिरी। यह देखकर श्री रामदास पाण्डूरंग राम पै नदी में कूद पड़े तथा उस महिला को पकड़ लिया। वह उसे किनारे तक ले आए और इस प्रकार उसकी जान बचाई।

श्री रामदास पाण्डूरंग राम पै ने अपनी जान के खतरे की परवाह किए बिना डूबती हुई एक महिला को बचाने अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

12. श्री दत्तात्रे रामू जाबादे,
उतरत ग्राम, छिकोडी तालुक,
बेलगांव जिला, कर्नाटक।

3 अक्तूबर, 1986 को उतरत गांव का लगभग 10 वर्षीय बालक कुमार संदीप भैंसों को नहलाने के लिए अपनी मां के साथ दूधगंगा नदी पर गया। नदी में प्रवेश करते समय उसका पैर फिसल गया और वह पानी के तेज बहाव में बह गया। यह देखकर उसकी मां सहायता के लिए चीखती-पुकारती गांव की ओर भागी। उसकी चीख-पुकार सुनकर स्थानीय कालेज का एक छात्र श्री दत्तात्रे रामू जाबादे सहायता के लिए दौड़ा। वह नदी में कूद पड़ा गया और तेज प्रवाह के विपरीत तैरते हुए वह लड़के को बचाने में सफल हो गया।

श्री दत्तात्रे रामू जाबादे ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना लड़के की जान बचाने में बड़े धैर्य का प्रदर्शन किया।

13. श्री धारानाथ खारवी,
पुत्र श्री नागप्पा खारवी,
टोटा बंगारे, मंगलूर,
(कर्नाटक)।

10 दिसम्बर, 1987 को नमक से लदा हुआ एक जलयान खराब मौसम के कारण मंगलूर के अप्रवाही जल में प्रवेश न कर सका। तभी जलयान का प्रमुख छः व्यक्तियों के कर्मीदल के साथ लांच की व्यवस्था करने के लिए जीवन-नौका से बैठकर तट पर आए लेकिन उन्हें लांच नहीं मिला। जब वे लौटकर अपने जलयान की ओर जा रहे थे तो उनकी जीवन नौका उलट गई और वे सभी समुद्र में गिर गए। यह देखकर श्री धारानाथ खारवी चार अन्य व्यक्तियों के साथ अपनी फिशिंग लांच में बैठकर घटनास्थल पर आए और कर्मी-दल को बचा लिया। यदि श्री धारानाथ खारवी भारी वर्षा और तूफान के बीच समय पर तत्परता से साहस नहीं दिखाते तो छः व्यक्तियों की जान जा सकती थी।

श्री धारानाथ खारवी ने अपनी जान के खतरे की परवाह किए बिना डूबने से छह व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

14. श्री अरविन्द,
पुत्र श्री रंगाचार जोशी,
क्वार्टर नं० 9, तालुका पंचायत समिति,
बस स्टैन्ड के पास,
पोस्ट गंगावती—583227,
कर्नाटक।

7 जून, 1988 को शाम लगभग 6.30 बजे नवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण होने से हताश एक 16 वर्षीय लड़की ने 10 फुट जल स्तर वाले 45 फुट गहरे कुएं में छलांग लगा दी। गंगावती यूनिट के एक होम गार्ड, श्री अरविन्द ने उसे देख लिया और तत्काल उसकी सहायता के लिए दौड़ा आया। वह कुएं में कूद गया और एक रस्सी की सहायता तथा वहां अन्य एकत्रित अन्य लोगों की मदद से लड़की को बाहर निकाल लाया। उसने उसे कृत्रिम सांस दी और पास के अस्पताल में पहुंचा दिया।

श्री अरविन्द ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए डूबती हुई लड़की को बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

15. श्री गुरुपादप्पा मालप्पा बैरागी,
होम गार्ड, बागलकोट यूनिट मार्फत
आई० एच० डी० पी० शाखा प्रियदर्शिनी,
आसंगी रोड़, बागलकोट—587311,
बागलकोट तालुक, बीजापुर जिला (कर्नाटक)।

3 अक्तूबर, 1987 को प्रातः लगभग 9.30 बजे एक 28 वर्षीय महिला पानी के तालाब से पानी खींचते समय अचानक ही तालाब में गिर गई। शोरगुल सुनकर श्री गुरुपादप्पा मालप्पा बैरागी घटनास्थल पर पहुंच गए। उसकी दशा देखते ही वह शीघ्र ही तालाब में कूद गए जो कि लगभग 11 फुट गहरा था और उस महिला को डूबने से बचा लिया। वे रस्सी की सहायता से महिला को तालाब से अचेत अवस्था में बाहर ले आए। उसे प्राथमिक चिकित्सा सहायता प्रदान की तथा कृत्रिम श्वास के जरिए उसे पुनर्जीवित किया।

श्री गुरुपादप्पा मालप्पा बैरागी ने अपनी जान को खतरे में डालकर डूबती हुई महिला को बचा लिया और इस प्रकार उन्होंने अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

16. श्री माधवन विश्वनाथन,
वाक्कोलिल पडीयीत्तल हाऊस,
पयीपाद, पयीपाद पोस्ट आफिस (वाया),
हरिपाद, एलेप्पी जिला (केरल)।

29 जून, 1987 को प्रातः लगभग 7 बजे श्री माधवन विश्वनाथन ने पीयीपाद और कारीछल को जोड़ने वाले पयीपाद् पुल पर चलते हुए उफनती हुई अछनकोइल नदी में कुछ गिरने की आवाज सुनी। वह तत्काल 25 फुट ऊंचे पुल से नदी में कूद पड़े और बच्चे को हाथ में थामे हुए महिला को पकड़ लिया जो अचानक नदी में गिर पड़ी थी। वह लगभग 10 मीटर तैरकर उस पार तक गए और उन्हें किनारे पर ले आए। उन्होंने अपने जीवन की परवाह किए बिना यह सारा बचाव कार्य अकेले ही किया।

श्री माधवन विश्वनाथन ने दो व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

17. श्री मोहनन पिल्लै टी० के०,
थप्पोरु वीडु, पुनथाला पोस्ट आफिस
वेनमोनी, छनगनोर, एलेप्पी जिला,
केरल।

18. श्री आनन्द कुरुप,
कोलस्सेरियिल, पुनथाला पोस्ट आफिस,
वेनयोनी, छनगनोर, एलेप्पी जिला,
केरल।

4 अगस्त, 1987 को प्रातः 9 बजे श्री आनीकुट्टी, जो अपने घर के कुएं की सफाई करने के उद्देश्य से उसमें उतरे थे, वहां विद्यमान किसी जहरीली गैस के कारण अचानक ही अचेत होकर कुएं में गिर गए और उनकी मृत्यु हो गई। उनकी सहायता के लिए आए दो पड़ोसी भी कुएं के भीतर मर गए। तब थेक्केचमरमन्नील डेनियल, के० वी० कुरुप, मोहनन पिल्लै टी० के० और आनन्द कुरुप ने बचाव कार्य संचालित किया। कुएं के भीतर गैस द्वारा होने वाले गंभीर खतरे को महसूस करते हुए श्री मोहनन पिल्लै और श्री आनन्द कुरुप शीघ्र ही कुएं में बाहर आ गए। उन्होंने एक रस्सी की सहायता से एक टेबिल फैन कुएं में उतारा और उसे चला दिया। इसके साथ-साथ वे भी कुएं में उतर गए। पंखे से ताजी हवा मिलने लगी जिससे जहरीली गैस की प्रबलता कम हो गई। वे दोनों अपने जीवन के अत्यंत गंभीर खतरे की परवाह किए बिना इस दुसाध्य कार्य में जुटे रहे और अंत में गैस लासदी के पांच पीड़ित व्यक्तियों को कुएं से बाहर निकालने में सफल हो गए, जिनमें से तीन व्यक्ति मर चुके थे। बचाव कार्य के पश्चात् सर्वश्री मोहनन पिल्लै और आनन्द कुरुप भी थककर चूर हो जाने के कारण अचेत हो गए और उन्हें भी अन्य पीड़ित व्यक्तियों के साथ ही अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा।

यदि श्री मोहनन पिल्लै टी० के० और श्री आनन्द कुरुप ने समय पर साहसपूर्ण कार्रवाई न की होती तो पीड़ित सभी व्यक्ति दुर्घटना में मारे गए होते।

19. श्री वी० सी० जोसेफ,
वल्लिया वेथिल हाउस,
छेत्तमकारी वेस्ट, कनकारी,
एलेप्पी जिला (केरल)।

20. श्री ए० डी० जोसेफ,
अरुवन परम्बिल,
छेत्तमकारी वेस्ट, कनकारी,
एलेप्पी जिला (केरल)।

8 फरवरी, 1987 को प्रातः 11.30 बजे 12 व्यक्तियों को ले जा रही एक देसी नौका नदी के बीचों-बीच उलट गई। यद्यपि हजारों लोगों ने इस विपत्ति को देखा किन्तु कोई भी उन्हें बचाने के लिए आगे नहीं आया। संकट की इस घड़ी में संयोगवश राज्य जल परिवहन विभाग की एक नौका वहां आ गई। ड्राइवर, श्री ए० डी० जोसेफ और सिरांग श्री वी० सी० जोसेफ उन व्यक्तियों को बचाने के लिए अपनी वर्दियों सहित नदी में कूद पड़े। उन्होंने कर्मी दल के अन्य सदस्यों की सहायता से डूबते हुए व्यक्तियों को एक-एक करके नाव में डाला।

श्री वी० सी० जोसेफ और श्री ए० डी० जोसेफ ने अपने जीवन के गंभीर खतरे की परवाह किए बिना डूबते हुए अनेक व्यक्तियों को बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

21. श्री के० के० पुरोहित
बिक्री-कर अधिकारी,
42, स्नेह नगर, ग्रीनलैंड,
इंदौर–452001 (मध्य प्रदेश)।

1 नवम्बर, 1984 को श्री के० के० पुरोहित ने एम० आई० जी० कालोनी, इन्दौर से निकलते हुए देखा कि एक क्रुद्ध भीड़ ने एक सिख परिवार के घर को आग लगा दी और उसे लूट रहे थे। आग फैल गई थी और बहुत से लोग जलते हुए घर के भीतर फंस गए थे। लगभग एक दर्जन लोग बेहोश हो गए थे और सांस रुक जाने या जलने से उनकी मृत्यु हो जाने का खतरा था। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए और अपने जीवन के प्रति अत्यन्त गंभीर खतरे की परवाह किए बिना श्री पुरोहित जलते हुए घर में घुस गए और एक-एक करके लगभग एक दर्जन व्यक्तियों को बचा लिया, जो सांस के साथ कार्बन मानोआक्साइड अंदर ले जाने के कारण बेहोश हो गए थे। वह पीड़ित व्यक्तियों को जलते हुए मकान में से बाहर लाने में सफल रहे और धीरे-धीरे ताजी हवा में उन्हें होश आता गया।

श्री के० के० पुरोहित ने अपने जीवन की सुरक्षा के प्रति खतरे की परवाह किए बिना जलते हुए मकान में फंसे हुए अनेक लोगों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

22. श्री गुरुदास नागेश बाबरेकर,
बिटठलवाड़ी, शान्तिनगर, पोस्ट उल्हासनगर,
बाबरेकर चाल, तहसील उल्हासनगर, जिला थाणे,
महाराष्ट्र।

23. श्री कमलकान्त शामसुन्दर पांडे,
शान्तिनगर, आपोजिट बैरक नं० 1201,
पोस्ट उल्हासनगर, कैम्प नं० 3, तहसील उल्हासनगर,
जिला थाणे, महाराष्ट्र।

8 अगस्त 1986 को भारी वर्षा के कारण नदी तथा उल्हासनगर, महाराष्ट्र के आसपास के क्षेत्रों में भारी वर्षा के कारण बाढ़ आ गई थी और कुछ लोगों ने मरम्मत के लिए पुल पर खड़ी बस में शरण ले ली थी। बाढ़ के पानी के ऊपर तक बहने के कारण बस अचानक ही पानी के भाव-साथ खिसकने लगी। सर्वश्री गुरुदास नागेश बाबरेकर और कमलकान्त शामसुन्दर पांडे ने जब यह देखा तो उन्हें बस में बैठे लोगों के जीवन के खतरे का आभास हुआ। वे शीघ्र ही एक बड़ी रस्सी ले आए और उसका एक सिरा बिजली के खम्भे से बांध दिया। श्री बाबरेकर रस्सी के दूसरे सिरे को पकड़कर पानी में कूद गये और उसे बस से बांध दिया। उन्होंने रस्सी की सहायता से बस के अन्दर के लोगों को सुरक्षित स्थान पर लाने का प्रयत्न किया किन्तु बाढ़ के पानी के सतत भारी बहाव के कारण ऐसा करना कठिन था। श्री बाबरेकर एक और रस्सी ले आए और उसे खम्भे से बांध दिया और उसके दूसरे सिरे को बस से बांधने का प्रयत्न किया। ऐसा करते हुए वह स्वयं ही बहने लगे और घायल भी हो गए। संयोगवश, वह एक सीमेंट के खम्भे को पकड़ने में सफल हो गए। उन्होंने दोबारा रस्सी को पकड़ा और इस प्रकार 15 व्यक्तियों को सुरक्षित स्थान पर लाने में समर्थ हुए। इस सम्पूर्ण बचाव कार्य के दौरान श्री पांडे ने बहुमूल्य सहायता प्रदान की।

श्री गुरुदास नागेश बाबरेकर और श्री कमलकान्त शामसुन्दर पांडे ने अपने जीवन को गंभीर खतरे में डालकर 15 व्यक्तियों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

24. कुमारी स्वाति हरीश अमलते,
430–सी, साठे बंगलो,
एम० जी० रोड, नासिक–422002,
महाराष्ट्र।

23 जुलाई, 1986 को श्रीमती अश्विनी लाले एक लोहे के डंडे पर गीला तौलिया डालते समय बिजलीकृत डंडे से चिपक गई। उनकी चीख-पुकार सुनकर सास बाहर आई और यह देखने के लिए कि उन्हें क्या हुआ है, उनके हाथ पकड़ लिए। बस वह भी श्रीमती लाले के साथ चिपक गई। चीख-पुकार सुनकर श्रीमती लाले के दो पुत्र भी दौड़ते हुए अपनी मां व दादी के पास आए। कुमारी स्वाति हरीश अमलते ने, जो वहां मौजूद थीं, खतरे की आशंका से शीघ्रता से दोनों बच्चों को पकड़ कर रोक लिया। तभी वह घर के भीतर गई और एक लकड़ी का बेलन ले आई और उसकी मदद से श्रीमती लाले के हाथों को उस बिजलीकृत लोहे

के डंडे से अलग किया। दोनों महिलाएं बेहोश होकर जमीन पर गिर गईं। कुमारी स्वाति तभी घर के भीतर गई और बिजली के मैन स्विच में से चिनगारियां निकलती देखीं। उसने स्विच को बंद कर दिया। फिर वह घर से बाहर आकर मदद के लिए चीखी चिल्लाई और एक डाक्टर बुला लाई जिसने उनका उपचार किया।

कुमारी स्वाति हरीश अमरने ने दो महिलाओं की जाने बचाने में अदम्य साहस, तत्परता और बड़ी सूझबूझ का परिचय दिया।

25. कुमार गणेश बाबूराव आचार्य,
पाथरवाड़ी, तहसील और जिला लातूर,
महाराष्ट्र।

1 जुलाई, 1985 को महाराष्ट्र राज्य एन० सी० सी० के कैडेट कुमार गणेश बाबूराव आचार्य और कुमार बोर्डे भाखड़ा में आयोजित पंजाब एन० सी० सी० राष्ट्रीय एकता शिविर से रेल द्वारा वापस लौट रहे थे। जैसे ही गाड़ी राजपुरा रेलवे स्टेशन (पंजाब) से आगे बढ़ी और उसने गति पकड़ ली कुमार बोर्डे बाह्य सिगनल से टकराकर जख्मी हो गया और रेलगाड़ी से नीचे जा गिरा। यह देखकर कुमार गणेश बाबूराव आचार्य अपनी जान की परवाह किए बिना चलती गाड़ी से नीचे कूद गया और घटनास्थल की तरफ भागा। कुमार बोर्डे रेल पटरी पर बेहोश पड़ा था तथा उसके सिर में गंभीर चोट आ गई थी। पटरी पर दूसरी गाड़ी तेजी से चली आ रही थी, इसलिए कुमार गणेश बाबूराव आचार्य ने कुमार बोर्डे को पटरी से तत्काल हटा लिया और इस प्रकार उसे सामने खड़ी मौत से बचा लिया। इसके बाद, वह उसे नजदीक की डिस्पेंसरी में ले गया और तत्काल चिकित्सा सहायता दिलाई।

कुमार गणेश बाबूराव आचार्य ने अपनी जान की परवाह किए बिना अपने साथी कैडेट की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

26. मास्टर चेतन मोहन खारकुंडी,
स्थान एवं डाकघर अरनाला,
तालुका वसई, जिला ठाणे,
महाराष्ट्र।

27. श्री भाईचन्द्र वासुदेव कोली,
स्थान एवं डाकघर अरनाला,
तालुका वसई, जिला ठाणे,
महाराष्ट्र।

28. श्री सी० ए० जोधर खाटू,
स्थान एवं डाकघर अरनाला,
तालुका वसई, जिला ठाणे,
महाराष्ट्र।

29. श्री लक्ष्मण शिनवार खारकुन्ड,
स्थान एवं डाकघर अरनाला,
तालुका वसई, जिला ठाणे,
महाराष्ट्र।

30. श्री बसस्याव फ्रांसिस डेडू,
स्थान एवं डाकघर अरनाला,
तालुका वसई, जिला ठाणे,
महाराष्ट्र।

31. श्री आंद्र इनाम थाटू,
स्थान एवं डाकघर अरनाला,
तालुका वसई, जिला ठाणे,
महाराष्ट्र।

32. श्री जूज्या बाबू ओटेकर,
स्थान एवं डाकघर अरनाला,
तालुका वसई, जिला ठाणे,
महाराष्ट्र।

12 अक्तूबर, 1986 को कुछ भक्तजन ठाणे जिला, महाराष्ट्र में अरनाला किले पर स्थित कालिका देवी के दर्शनों के लिए गए। लौटते समय वे मछली पकड़ने की बड़ी नौका से उतरकर एक छोटी नौका में सवार हो गए परन्तु किनारे से 75 मीटर दूर जाकर छोटी नौका उलट गई और सभी 19 व्यक्ति समुद्र में गिर गए। सर्वश्री भाईचन्द्र वासुदेव कोली, सी० ए० जोधर खाटू, लक्ष्मण शिनवार खारकुन्डे, बसस्याव फांसिस डेडू, आंद्र इनाम थाटू, जुज्या बाबू ओटेकर और मास्टर चेतन मोहन खारकुंडे ने इसे देख लिया और उन्हें बचाने के लिए दौड़ पड़े। वे तैरकर घटनास्थल पर पहुंचे और संघर्षरत 19 में से 12 व्यक्तियों को सुरक्षित स्थान पर ले आए। दुर्भाग्यवश बाकी सात व्यक्तियों के प्राण नहीं बचाए जा सके। इन व्यक्तियों ने अपने जीवन को गंभीर खतरे में डालकर 12 व्यक्तियों को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

33. मास्टर सुशील आनन्द वाबले,
वाड़गांव साहनी, तालुका जुन्नार,
जिला पुणे, महाराष्ट्र।

13 जुलाई, 1986 को दिनेश किशन वाबले (7 वर्ष) तथा संदीप किशन वाबले (5 वर्ष) नहर के पास खेल रहे थे जबकि उनकी मां कहीं दूर खेत में काम कर रही थी। पानी पीते समय संदीप ने अपना संतुलन खो दिया और वह 4 फुट गहरी नहर में जा गिरा। संदीप को पकड़ने की कोशिश में दिनेश भी नहर में गिर पड़ा। दोनों बच्चे अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहे थे। मास्टर सुशील आनन्द वाबले ने जो कुछ दूरी पर नहर के पुल पर बैठा था, यह सब देखा और उन्हें बचाने के लिए दौड़ पड़ा। वह नहर के साथ-साथ लगभग 300 मीटर तक भागा और उसमें कूद गया। उसने पहले दिनेश को पकड़ा और उसे बाहर ले आया। इस बीच, संदीप 250 मीटर और आगे बह गया। तब मास्टर सुशील वाबले तैर कर तत्काल वहां पहुंचा और उसे भी पानी से बाहर निकाल लाया। वहां इकट्ठा हुए अन्य लोगों की सहायता से वह दोनों बेहोश लड़कों को चिकित्सा उपचार के लिए जुन्नार ले गया।

यदि मास्टर सुशील आनन्द वाबले अदम्य साहस और तत्परता नहीं दिखाते तो दोनों बच्चों को नहर के पानी में जान गंवाने से बचाया नहीं जा सकता था।

34. श्री प्रभाकर दत्तात्रेय खांडके,
मार्फत छाया फोटो स्टूडियो पाटन,
पोस्ट पाटन-415206, तालुका पाटन,
जिला सतारा, महाराष्ट्र।

35. श्री शंकरराव बन्धु देसाई,
मार्फत यातायात नियंत्रण कक्ष,
एस० टी० कोयनानगर, पोस्ट कोयना,
तालुक पाटन, जिला सतारा,
महाराष्ट्र।

21 जून, 1984 को 50 से 60 यात्रियों की एक बस कोयना नदी के पुल से गुजर रही थी। तब बड़े जोर की बारिश हो रही थी और नदी में बाढ़ आई हुई थी। मोड़ काटते समय बस नदी में जा गिरी। सर्वश्री पी० डी० खांडके तथा शंकरराव बन्धु देसाई ने, जो वहां से गुजर रहे थे, बस को नदी में गिरते देखा। वे तत्काल नदी में कूद पड़े और यात्रियों को बचाने में जुट गए। उन्होंने सभी यात्रियों को बचा लिया। 18 यात्रियों को जो बुरी तरह से घायल हो गए पास के अस्पतालों में दाखिल करा दिया।

श्री प्रभाकर दत्तात्रेय खांडके तथा श्री शंकरराव अप्पू देसाई ने अपने जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए कई व्यक्तियों की जान बचाकर अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

36. श्री एकनाथ दिनकर गायकर,
प्रागोने गोलावली, तालुका कल्याण,
जिला थाणे, महाराष्ट्र।

37. श्री अन्ना गोपाल खाणे,
वायेर्ल, पोस्ट वावली, तालुका कल्याण,
जिला थाणे, महाराष्ट्र।

38. श्री पाटिल वान्दार कुन्डलिक,
अध्यक्ष, कांग्रेस (आई),
गोलावली एम० आई० डी० सी०, डोम्बीवाली,
तालुका कल्याण, जिला थाणे,
महाराष्ट्र।

29 अगस्त, 1984 को कल्याण नगर निगम के गोलावली क्षेत्र के निकट अति उच्च वोल्टेज वाली बिजली की एक तार गिर जाने से 6 व्यक्ति बहुत गंभीर रूप से जख्मी हो गए और बहुत से लोगों को भी बिजली का झटका लग जाने का डर था। स्थिति को देखते हुए सर्वश्री एकनाथ दिनकर गायकर, अन्ना गोपाल खाणे तथा पाटिल वान्दार कुन्डलिक उस तरफ भागे और एक लकड़ी की चारपाई की सहायता से उन्होंने सभी व्यक्तियों को बचा लिया।

श्री एकनाथ दिनकर गायकर, श्री अन्ना गोपाल खाणे और श्री पाटिल वान्दार कुन्डलिक के अदम्य साहस, समझबूझ तथा तत्परता के कारण 6 व्यक्तियों को बिजली से मरने से बचाया जा सका।

39. कुमारी शांता बाबूराव वारेकर,
पोस्ट घोड़ेगांव, तालुका श्री गौड़ा,
जिला अहमदनगर (महाराष्ट्र)।

3 फरवरी, 1987 को कुमारी शांता बाबूराव वारेकर (8 वर्ष) अपने भाईयों राजू (6 वर्ष), विजू (4 वर्ष) तथा सतीश (11 महीने) के साथ एक इमली के पेड़ के नीचे खेल रही थी। खेलते समय उसके तीनों भाई पास के एक कुएं में गिर पड़े। कुमारी शांता तत्काल कुएं में कूद पड़ी, हालांकि वह तैरना नहीं जानती थी तो भी वह बारी-बारी उन्हें कुएं की सीढ़ियों के पास ले आयी। बाद में उसने उन्हें कुएं से बाहर निकाल लिया।

कुमारी शांता बाबूराव वारेकर ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए अपने तीनों भाईयों को बचाकर अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

40. श्री अफजल पटेल,
एट एण्ड पोस्ट औरवाडी, तालुका शिरोल,
जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

9 जुलाई, 1987 को श्री अप्पा नायकवाड़ी कृष्णा नदी में नहाते हुए अचानक फिसले तथा उफनती नदी में गिर पड़े। जहां यह घटना घटी वहां बाढ़ का पानी औरवाद तथा नरसिन्हावडी को जोड़ने वाले पुल के 10 फुट ऊपर तक बह रहा था। श्री अफजल पटेल ने जो पास के खेतों में काम कर रहे थे श्री नायकवाड़ी को डूबते हुए देखा। वह अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना तत्काल नदी में कूद पड़े और उस अभागे व्यक्ति को अपनी पीठ पर घसीट कर किनारे पर ले आए।

श्री अफजल पटेल ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए श्री नायकवाड़ी के जीवन को बचाकर अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

41. श्री रोबुना,
तुईपुई, दरजोकाई, डाकखाना हनाथियाल,
मिजोरम।

28 अप्रैल, 1987 को दोपहर लगभग एक बजे एक नौका में जीवें और असम राइफल्स के कार्मिक तथा उसके परिवार एवं कुछ असैनिक कालादान नदी के उस पार जा रहे थे। यह नौका कालादान नदी में उलट गयी और सभी यात्री डूबने लगे। कुछ यात्री नौका से गिरे हुए टाट के उन बोरों को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे जो तेज धार में बहते जा रहे थे। 4 वर्ष की एक छोटी-सी लड़की बड़ी मुश्किल से बोरे को पकड़े हुए नदी के बीच बहती जा रही थी। श्री रोबुना ने जो पास में ही खेल रहे थे, देख लिया और उसे बचाने के लिए दौड़ पड़े।

श्री रोबुना वहाँ बंधी हुई एक डोंगी में कूद पड़े तथा उस लड़की की ओर जाने लगे। वह लड़की के पास पहुंचे और उसका हाथ पकड़ लिया जिससे डोंगी अनियंत्रित होकर बहने लगी। परिश्रम के साथ उन्होंने सहमी हुई उस लड़की को अपनी डोंगी में डाल लिया और वापस नदी के किनारे की तरफ बढ़ने लगा। उसी क्षण उसने एक औरत को उस उलटी हुई नौका के निकट डूबते हुए देखा तथा फौरन उसकी ओर बढ़ गया। उसके निकट पहुँच कर उसने चप्पू छोड़ दिया और उस औरत को उठाने की कोशिश की। लेकिन वह औरत बहुत भारी थी और वह स्वयं दुबला-पतला था इसीलिए वह उसे उठाकर डोंगी में न डाल सका। तब उसने उस औरत को बालों से पकड़ लिया और उसके मुंह को पानी से ऊपर रखा फिर मदद के लिए शोर मचाया। तभी एक दूसरी नौका वहां आ पहुंची जिसमें तीन युवक सवार थे और उन्होंने उसमें औरत को खींच कर डोंगी में डाल दिया।

श्री रोबुना ने मानवता के प्रति अगाध लगाव और दृढ़ इच्छा के कारण अपने जीवन के प्रति गंभीर खतरे की परवाह किए बिना दो व्यक्तियों को अवश्यंभावी मौत से बचा लिया।

42. श्री वनगुडा,
तुईपुई, दरजोकाई,
डाकखाना हनाथियाल,
मिजोरम।

28 अप्रैल, 1987 को दोपहर लगभग एक बजे श्री वनगुडा कालादान नदी के तट पर तुईपुई नौका में बैठे थे। अचानक उन्होंने कुछ हलचल सी सुनी तथा नदी की ओर देखा। उन्होंने पाया कि एक नौका नदी के बीच उलट रही थी। उन्होंने सभी यात्रियों को नदी में गिरते देखा। नौका में सवार दो व्यक्तियों ने नदी में गिरते समय एक स्टील की तारवाली रस्सी को पकड़ लिया जो नदी के किनारे खड़ी हुई एक नौका से बंधी हुई थी। ये दोनों व्यक्ति नदी की तेज धारा से खिंचते चले जा रहे थे और बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाने के लिए तारों को पकड़े हुए थे। श्री वनगुडा ने तुरन्त एक देसी नौका ली तथा तेज धारा के विपरीत जाकर घटनास्थल पर पहुंचे तथा संघर्षरत दोनों व्यक्तियों को बचा लिया।

श्री वनगुडा की जान को गंभीर खतरा होते हुए भी उनके इस साहसिक कार्य से दोनों व्यक्तियों की जान बचायी जा सकी।

43. कुमारी लालनुनपुई,
गांव तथा डाकघर कोलोसिब,
मिजोरम।

23 दिसम्बर, 1987 को दोपहर लगभग एक बजे रावपुई गांव, जिला लुंगले के समीप एक ट्रक दुर्घटनाग्रस्त हो गया और सड़क से कई मीटर नीचे तेज ढलान पर लुढ़क गया। इस ट्रक में ड्राइवर तथा हैंडीमैन सहित कुल 23 व्यक्ति थे। उनमें से छह व्यक्ति दुर्घटनास्थल पर ही मर गए तथा शेष सभी 17 व्यक्तियों को चोटें आई।

इन घायल व्यक्तियों में से एक 17 वर्षीय कुमारी लालनुनपुई बड़ी कठिनाई से सड़क पर चढ़ गई और चोटें लगने तथा सदमा पहुंचने के बावजूद वह मदद के लिए रात के गहन अंधेरे में अकेली ही 4 किलोमीटर दूर सबसे पास के गांव रावपुई गई। रावपुई गांव के निवासी तुरन्त घटनास्थल पहुंचे तथा उन्होंने बचाव कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने तुरन्त सभी घायल व्यक्तियों को पास के अस्पताल पहुंचाया तथा छह मृतक व्यक्तियों को भी उनके निवास स्थान पर पहुंचा दिया।

कुमारी लालनुनपुई ने अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया और बहुत से व्यक्तियों की जान बचाने में मदद की।

44. कुमारी ज्योत्सनामयी बहेड़ा,
पुत्री श्री सुबाल बहेड़ा,
ग्राम नुआ साही, पो०/डाकखाना,
एथामनिक, पुलिस स्टेशन एथामनिक,
जिला धेनकनाल (उड़ीसा)।

11 जुलाई, 1986 को प्रातः लगभग 10 बजे जब कुमारी ज्योत्सनामयी बहेड़ा स्कूल जाते समय "पुलिस बन्ध" नामक एक तालाब की मेंड़ से गुजर रही थी तो उसने दो लड़कियों को तालाब में डूबते हुए देखा। वह तुरन्त उस तालाब में कूद पड़ी और तैरकर उनके पास पहुंची। वह निरन्तर उन संघर्षरत लड़कियों को तालाब के कम पानी वाले भाग की ओर धकेलती रहीं जहां उनके पांव जमीन को छूने लगे। इस प्रकार वह उनकी जान बचाने में सफल हुई।

कुमारी ज्योत्सनामयी बहेड़ा ने अपनी जान को गंभीर खतरे की परवाह किए बिना उन दो लड़कियों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

45. श्री डैनी प्रधान
ग्राम टिहीड़ी थाना टिहीड़ी,
जिला बालासोर (उड़ीसा)

14 जून, 1986 को प्रातः लगभग 11 बजे दो लड़के स्नान करते हुए अचानक गांव के एक तालाब में आ गिरे। उन्हें तैरना नहीं आता था, इसीलिए वे अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। श्री डैनी प्रधान श्रमिक ने जो पास ही कार्य कर रहे थे इस दृश्य को देखा। वह तालाब की ओर दौड़े तथा उसमें कूद पड़े। उन्होंने दोनों लड़कों को उठाया तथा तैरकर तालाब के किनारे ले आए।

श्री डैनी प्रधान ने अपनी जान को गहरे जोखिम में डालकर दो लड़कों की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

46. मास्टर अंकुर खुराना,
पुत्र मेजर ए० के० खुराना,
19 मैकेनाइज्ड बटालियन,
मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

18 जनवरी, 1987 को दिन में लगभग 11 बजे चार बच्चे नामतः मास्टर शान्तनु ओबेराय (10 वर्ष) मास्टर सौरभ ओबेराय (8 वर्ष), मास्टर अंकुर खुराना (9 वर्ष) और कुमारी आस्था खुराना (6 वर्ष) मान्धूवाली सैनिक क्षेत्र में स्थित 20-25 फुट गहरी झील के पास खेल रहे थे। इनमें से कोई भी बच्चा तैरना नहीं जानता था। कुमारी आस्था खुराना अचानक फिसलकर तालाब में जा गिरी और डूबने लगी। यह देखकर मास्टर सौरभ ओबेराय उसे बचाने के लिए तालाब में कूद पड़ा लेकिन वह स्वयं भी डूबने लगा। उन्हें डूबता देखकर कुमारी आस्था खुराना का बड़ा भाई मास्टर अंकुर खुराना भी तालाब में कूद पड़ा। वह उन दोनों को किनारे तक ले आया किन्तु वह उनको बाहर न निकाल सका क्योंकि किनारा ऊंचा तथा फिसलन वाला था। अंकुर खुराना जूझ रहा था तभी मास्टर शान्तनु ने जो तालाब के किनारे सहायता के लिए पुकार रहा था, एक पेड़ की टहनी के सहारे उसकी सहायता की। पास से गुजर रहे एक सन्तरी ने चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनीं और वह दौड़कर घटनास्थल पर आ पहुंचा और तीनों बच्चों को बाहर निकाल लाया, किन्तु उस समय तक कुमारी आस्था खुराना और मास्टर सौरभ ओबेराय मर चुके थे।

मास्टर अंकुर खुराना ने दो की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

47. श्री रघुवीर सिंह,
पुत्र श्री पदम सिंह,
निवासी घेर नसवारियां,
गंगा मन्दिर,
भरतपुर (राजस्थान)

सन् 1957 में श्री रघुवीर सिंह ने सुजान गंगा नहर में डूबती हुई दो लड़कियों की जान बचाई थी।

13 जुलाई, 1982 को श्री बाबूलाल माथुर के घर में गैस सिलेण्डर को आग लग गई और आग फैलने लगी। श्री रघुवीर सिंह अपनी जान की परवाह किए बिना छत पर चढ़कर मकान के भीतर कूद गए। उन्होंने जलते हुए सिलैण्डर को पकड़ा और उसे कपड़ों में लपेटकर घर से बाहर खुले मैदान में ले आए। उन्होंने सिलैण्डर पर रेत और मिट्टी डालकर आग बुझा दी और इस प्रकार से विनाश को बचा लिया।

14 जनवरी, 1986 को श्री रघुवीर सिंह ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए कुएं में कूदकर कुएं में डूब रहे एक पांच वर्ष के बच्चे की जान बचाई थी।

श्री रघुवीर सिंह ने अपने जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए तीन मौकों पर जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

48. श्री गौतम कुमार सनाढ्य,
पुत्र श्री राधा कृष्ण सनाढ्य,
वार्ड नं० 15, रेती मोहल्ला,
कांकरोली, जिला उदयपुर (राजस्थान)।

22 मई, 1987 को अहमदाबाद से कांकरोली मन्दिर में आया एक तीर्थयात्री पास के तालाब में स्नान कर रहा था। पानी के तेज बहाव के कारण वह तालाब में गिर गया और डूबने लगा। पास खड़े लोगों ने सहायता के लिए चीख-पुकार की। श्री गौतम कुमार सनाढ्य जो वहीं मौजूद थे, तत्काल तालाब में कूद पड़े और उसे बचा लिया।

21 जून, 1987 को श्री सनाढ्य डूबते हुए एक व्यक्ति को बचाने के लिए तालाब में कूद पड़े किन्तु केवल उसका मृतक शरीर ही उनके हाथ लगा।

9 अगस्त, 1987 को तीन लड़के तालाब में नौका-विहार कर रहे थे कि उनकी नाव कांटेदार झाड़ियों में उलझ गई। यह देखकर श्री सनाढ्य तालाब में कूद पड़े और लगभग 300 मीटर तैरने के पश्चात नाव को सुरक्षित स्थान पर ले आने में सफल हुए। इस प्रकार उन्होंने तीन युवकों की जान बचाई।

श्री सनाढ्य ने अपनी सुरक्षा के गंभीर खतरे की परवाह किए बिना खतरे में घिरे लोगों की जान बचाने में तीन अवसरों पर अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

49. श्री पी० एस० हमीद,
बोट लासकर,
पोर्ट डिपोर्टमेंट, अमीनी,
लक्षद्वीप।

14 जुलाई, 1984 को लक्षद्वीप प्रशासन के पत्तन विभाग की पैदलो नौका जहाज से 25 यात्रियों को लेने के पश्चात् कवारत्ती के लैगून में प्रवेश करते समय खुले समुद्र से बहकर भयंकर लहरों के कारण उलट गई। नौका में सवार सभी लोगों की जान संकट में थी। प्रशासन की "कामिनी" नामक एक नौका उनके बचाव के लिए आई। "कामिनी" के लासकर श्री पी० एस० हमीद ने अपने जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए, दल के अन्य सदस्यों की सहायता से असहाय व्यक्तियों को बचाने का भरसक प्रयत्न किया। श्री हमीद एवं "कामिनी" के दल के अन्य सदस्यों द्वारा समय पर की गई कार्रवाई से एक व्यक्ति को छोड़कर शेष सभी यात्रियों की जान बचा ली गयी।

श्री पी० एस० हमीद ने कई व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

50. 4454285 लांस नायक देवी दयाल,
14 सिख एल० आई०, मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

51. 4455987 सिपाही भिन्दर सिंह,
14 सिख एल० आई०, मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

52. 4459586 सिपाही बलबार सिंह,
14, सिख एल० आई० मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

53. 4463145 सिपाही अमरीक सिंह,
14 सिख एल० आई०, मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

54. 4454749 सिपाही लखवीर सिंह,
14 सिख एल० आई०, मार्फत 56 ए० ओ० पी०।

55. 4462092 लांस नायक परगट सिंह,
14 सिख एल० आई०, मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

56. 4462400 सिपाही गुरमेल सिंह,
14 सिख एल० आई०, मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

57. 4464042 सिपाही लखबीर सिंह,
14 सिख एल० आई०, मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

9 जुलाई, 1987 को प्रातः लगभग 4.30 बजे दिल्ली जाने वाली दक्षिण एक्सप्रेस के आगे के कुछ डिब्बे अचानक भयंकर बाढ़ के कारण पटरी से उतर कर पलट गए। 14 सिख लाईट इन्फैंट्री के उपरोक्त जवान, जो उसी रेल में यात्रा कर रहे थे, शीघ्र ही बचाव कार्य में जुट गए।

वे मूसलाधार वर्षा में कमर तक गहरे पानी के तेज बहाव से होते हुए पटरी से उतरे हुए डिब्बों पर चढ़ गए। उन्होंने अन्य जवानों की मदद से डूबते हुए लगभग 70 यात्रियों को बचाने में सफलता पाई।

प्रातः लगभग 5 बजे जब पौ फटी और बारिश हल्की हुई तो कुछ दिखाई देने लगा। तब उन्होंने देखा कि गाड़ी के दो अन्य डिब्बे लगभग 150 फुट दूर पानी में बह रहे थे और लगभग पूरी तरह से डूबे हुए थे। वे उल्टे हुए डिब्बों पर चढ़ गए और देखा कि एक दुबली-पतली लड़की खिड़की की सलाखों को पकड़े हुए थी। खिड़की को तोड़कर कुछ जवान गदले पानी में तैरकर गए और लड़की को बचा लिया। बाद में, इन जवानों ने इस धंसे हुए डिब्बों से चौबीस शवों को बाहर निकाला।

प्रातः लगभग 5.30 बजे उन्होंने देखा कि एक महिला अपने डूबते हुए बच्चे को बचाने के लिए बाढ़ के पानी के भंवर में कूद रही थी। कुछ ही क्षणों में वह तेज बहाव में घिर गई और बहने लगी। एक जवान फुर्ती से गहरे पानी में घुसा और गदले पानी से होकर उस महिला को पकड़ने का प्रयत्न किया, किन्तु वह कीचड़ में फिसल गया और उसका बायां टखना मुड़ गया और बायें घुटने पर चोट आ गई। चोट की परवाह न करते हुए वह उठा और दो अन्य जवानों की सहायता से डूबती हुई महिला को बचाने में सफल हुआ।

सिख लाईट इन्फैंट्री के इन जवानों ने अपनी जान के खतरे की परवाह किए बिना, रेल दुर्घटना के शिकार लोगों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

58. 4549603 लांस नायक,
शर्मा मोहन लाल गीगा भाई,
11 महर सी/ओ० 56 ए० पी० ओ०।

1 फरवरी, 1987 की आधी रात को लोक निर्माण विभाग की भंडारशाला में जहां सेना और लोक निर्माण विभाग के कार्मिक सो रहे थे, विनाशकारी आग लग गई और खतरे की चेतावनी दी गई।

इंफैंट्री रेजीमैंट का ड्राईवर, लांस नायक शर्मा मोहन लाल गीगा भाई जो अपनी गाड़ी में सोया हुआ था जाग उठा और घटनास्थल की ओर भागा। तेज हवा के कारण आग प्रचण्ड रूप धारण करती गई और तेजी से फैलने लगी। उसके मौके को भांप लिया और वीरता से आगे बढ़ा। दरवाजा अंदर से बंद था, उसने ठोकर मारकर उसे तोड़ दिया और तभी आग की लपटों से उसका सामना हुआ। उसने धुएं में से झांककर देखा कि लोक निर्माण विभाग का एक चौकीदार अंदर पड़ा हुआ था और उसके कपड़ों में आग लगी हुई थी। उसने जान की परवाह किए बिना कमरे में घुसकर चौकीदार को उठा लिया और उसे बाहर ले आया। इस प्रक्रिया में उसके कपड़ों में आग लग गई। अन्य जवानों ने जो तब तक बाहर इकट्ठे हो चुके थे, दोनों को पकड़कर कम्बलों में लपेट लिया।

लांस नायक शर्मा मोहन लाल गीगा भाई ने एक व्यक्ति की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

59. 4178257 सिपाही बिक्रम चन्द,
16 कुमाऊं, सी/ओ 56 ए० पी० ओ०।

60. 4174257 नायक हयात सिंह,
16 कुमाऊं सी/ओ० 56 ए० पी० ओ०।

17 अप्रैल, 1987 को सुबह 10 बजकर 45 मिनट पर श्रीमती सुक्खी देवी जो बीकानेर गंगनहर में कपड़े धोने गई हुई थी, फिसल कर नहर में गिर गई। वह डूबने लगी और पानी की तेज धारा से दूर बहती जा रही थी। नहर 15 फुट गहरी थी तथा 2.5 नाट की रफ्तार से बह रही थी और नहर के किनारे ढलवें थे तथा उन पर ईंटें लगी हुई थीं। उसकी 10 वर्षीय लड़की ने मदद के लिए बेतहाशा चीखना-चिल्लाना शुरू किया। उसकी चीख-पुकार सुनकर सिपाही बिक्रम चन्द ने, जो लगभग 100 मीटर दूरी पर अपने बंकर की मरम्मत कर रहा था, डूबती हुई महिला की उंगलियां पानी के ऊपर देखीं। वह अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना नहर में कूद पड़ा तथा उसे पानी से खींचकर बाहर किनारे तक लाने का प्रयत्न किया। सिपाही बिक्रम चन्द स्वयं कुशल तैराक नहीं था, इसलिए उस महिला ने उसे भी पानी में खींच लिया और इस तरह तर्दनाक संघर्ष शुरू हुआ तथा और सिपाही लगभग डूबने लगा। ऐसी परिस्थिति में भी सिपाही बिक्रम चन्द ने हिम्मत नहीं हारी तथा अपनी कोशिश जारी रखी। इसी बीच उसके सेक्शन कमांडर नायक हयात सिंह ने जो कुशल तैराक था नहर में गोता लगाया और उस महिला तक जा पहुंचा लेकिन वह भी महिला की मजबत पकड़ में आ गया और पानी में नीचे खिंचता चला गया। तथापि, उसने अपने को महिला की पकड़ से छुड़ा लिया लेकिन उसकी महिला पहुंच से बाहर हो गई। तभी महिला के वस्त्रों का कोई हिस्सा पानी की सतह पर दिखाई दिया और उसने तुरन्त उसे पकड़ लिया तब वह जैसे-तैसे उस बेहोश महिला को पानी से बाहर ले आया। दोनों जवानों ने उस महिला को प्राथमिक चिकित्सा देकर उसे पुर्नजीवन दिया।

इस प्रकार सिपाही बिक्रम चन्द तथा नायक हयात सिंह ने अपनी जान की परवाह न करते हुए एक डूबती हुई महिला की जान बचाकर अनुकरणीय साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

61. 9083489 नायक गुल्लू राम,
11 जे० ए० के० एल० आई०, मार्फत 56 ए० पी० ओ०,

62. 9081002 लांस हवलदार सुभाष चन्द्र,
11 जे० ए० के० एल० आई०, मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

7 अगस्त, 1986 को लगभग दोपहर के 2 बजे एक सिविल गाड़ी 11 जे० ए० के० एल० आई०, डिटेचमेंट कैम्प से लगभग 300 मीटर दूर भागीरथी नदी में गिर गई। यह देखकर कैम्प में ड्यिटी के संतरी ने खतरे का घंटा बजा दिया जिसे सुनकर नायक गुल्लू राम, लांस हवलदार सुभाष चन्द्र तथा अन्य जवान घटना स्थल पर पहुंच गए।

उन्होंने देखा कि डूबे हुए वाहन के कुछ लोग उफनती हुई नदी में तैरने का प्रयास कर रहे थे। पानी बिल्कुल गंदला था इसलिए वाहन नजर नहीं आ रहा था। नायक गुल्लूराम और लांस हवलदार सुभाष चन्द्र रस्सी के एक सिरे को टेलीफोन के खम्बे से तथा दूसरे को अपने शरीर से बांध कर नदी में कूद पड़े। वे गिरे हुए वाहन की तरफ बढ़े और डूबे हुए वाहन में फंसे यात्रियों की खोज शुरू कर दी। भारी मुश्किलों के बावजूद आखिरकार वे पांच व्यक्तियों को जल समाधि से बाहर निकालकर उनकी जान बचाने में कामयाब हुए।

नायब गुल्लू राम और लांस हवलदार सुभाष चन्द्र ने अपनी जान के खतरे की परवाह किए बिना पांच डूबते हुए व्यक्तियों की जान बचाने से अनुकरणीय साहस, तत्परता और उच्च कोटि के शौर्य का परिचय दिया।

63. 3372541 हवलदार मेजर सिंह,
7 सिख, द्वारा 56 ए० पी० ओ०,

64. 3378921 सिपाही सुरेन्द्र सिंह,
7 सिख, द्वारा 56 ए० पी० ओ०,

65. 13935488 लांस नायक/कार्पेंटर बृजभूषण शर्मा,
7 सिख, द्वारा 56 ए० पी० ओ०।

4 फरवरी, 1987 को दोपहर बाद लगभग 3.30 बजे, घरेलू सामान से लदा एक ट्रैक्टर, जिस पर तीन नागरिक सवार थे, खालरा-हरी के पुल को पार करते समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया और लगभग 15 फुट गहरे और आठ फुट से भी ज्यादा पानी भरे नाले में जा गिरा।

पास ही काम कर रहे हवलदार मेजर सिंह ने जोरदार धमाके की आवाज सुनी और वह सहायता के लिए चिल्लाता हुआ पुल की ओर भागा। उसका चिल्लाना सुनकर उसके अन्य दो साथी, सिपाही सुरेन्द्र सिंह और लांस नायक/कार्पेंटर बृज भूषण शर्मा भी पुल की ओर भागे। उन्होंने तत्काल बर्फीले पानी में कूद कर दुर्घटनाग्रस्त लोगों को बचा लिया। तब उन्होंने बेहोश पड़े उन दुर्घटनाग्रस्त लोगों को प्राथमिक चिकित्सा सहायता प्रदान की और फिर तत्काल उन्हें एडवांस ड्रेसिंग स्टेशन 307 फील्ड एबुलेंस ले गए। बहादुर जवानों ने समय पर साहसिक कार्य करके दो व्यक्तियों की जान बचाई। दुर्घटनाग्रस्त तीसरा व्यक्ति दुर्भाग्यवश मर गया।

हवलदार मेजर सिंह, सिपाही सुरेन्द्र सिंह और लांस नायक/कार्पेंटर बृजभूषण शर्मा ने अपनी जान के जोखिम की परवाह किए बिना दो व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस, सूझ-बूझ और तत्परता का परिचय दिया।

66. जे० सी० 112415 सूबेदार शोभनाथ,
14 राजपूत, द्वारा 56 ए० पी० ओ०।

12 अक्तूबर, 1985 को जब लांस नायक भरत राम और सिपाही कन्हैया पाण्डे बेतवा नहर में वाटरमैनशिप का प्रशिक्षण ले रहे थे, उसी समय उनकी नाव उलट गई। सूबेदार शोभनाथ जो वहीं थे उनकी सहायता के लिए आए और उन्होंने उनको डूबने से बचा लिया।

24 जुलाई, 1986 को एक नए सिपाही सुधाकर शर्मा ने ग्रेनेड से छेड़छाड़ करते हुए अपना सेफ्टी पिन निकाल दिया तथा ग्रेनेड को थरोइंग बे में ही फेंक दिया। सूबेदार शोभनाथ ने, जो अगली ही थरोइंग बे में थे खतरा महसूस किया और थरोइंग बे में कूद पड़े। उन्होंने ग्रेनेड को उठाकर बाहर फेंका दिया और ग्रेनेड तत्काल फट गया।

सूबेदार शोभनाथ ने डूबने से दो व्यक्तियों की जान बचाने में और दुर्घटनावश थरोइंग बे में गिराए गए ग्रेनेड का विस्फोट होने से रोकने में विशेष उत्साह और तत्परता का परिचय दिया।

67. श्री राम अवतार, (मरणोपरान्त)
16/1-06, राम चन्द्रपुरी,
निकट मेदा मिल फाटक,
सहारनपुर (उ० प्र०)।

23 अप्रैल, 1987 को एक टैंक ट्रक सहारनपुर बी० पी० सी० डिपो से पैट्रोल भरकर ले आ रहा था। जब टैंक ट्रक जी० टी० रोड पार करने के पश्चात् सहारनपुर रेलवे गुड्स शैड रोड पर प्रवेश कर रहा था तो झटका लगने से रीयर कम्पार्टमेंट से सड़क के साइड में बने ढाबे की खुली भट्टी के पास पैट्रोल बिखर गया और परिणामस्वरूप आग लग गई। ढाबे में और उसके आसपास बैठे 16 व्यक्ति आग की चपेट में आ गए।

इंडियन आयल कारपोरेशन लिमिटिड, सहारनपुर, का एक वरिष्ठ खलासी श्री राम अवतार, जो उस समय वहां मौजूद था, आग बुझाने और बदकिस्मत लोगों की मदद के लिए दौड़ा। ऐसा करते हुए वह स्वयं 100 प्रतिशत जल गया और 24 अप्रैल, 1987 को उसकी मृत्यु हो गई। इस दुर्घटना में 5 अन्य पीड़ितों की भी मृत्यु हो गई।

श्री राम अवतार ने आग की चपेट में आए बहुत से व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया किन्तु दुर्भाग्यवश उसकी अपनी जान चली गयी।

68. जी/91509 ओवरसीयर हरभजन सिंह,
394 रोड मैनटेनैंस प्लाटून,
(प्रोजेक्ट दीपक) द्वारा 56 ए० पी० ओ०।

16,047 फुट की ऊंचाई पर स्थित मनाली सरचू सड़क प्रोजैक्ट हिमांक के 800 से अधिक उन श्रमिकों के लिए मौत का फंदा बन गया जो 17 अक्तूबर, 1987 को मनाली के रास्ते लेह से चंडीगढ़ के लिए सड़क मार्ग से रवाना हुए थे क्योंकि हिमशैल गिरने के कारण लेह-श्रीनगर के बीच सड़क मार्ग बन्द हो गया था। 18 अक्तूबर, 1987 को लगभग शाम 7 बजे जब हिमाचल प्रदेश परिवहन निगम की 8 बसों और जी० आर० ई० एफ० के वाहनों का काफिला वहां पहुंचा तो भारी हिमपात हो रहा था। कम दिखाई देने और भारी हिमपात के कारण बसों के लिए आगे बढ़ना असम्भव हो गया था। 20 अक्तूबर को हुए लगातार हिमपात में फंसे व्यक्तियों और बसों की दशा और खराब हो गई। 21 अक्तूबर को कुछ यात्री केवल पैदल ही आगे चल सके किन्तु बर्फ में लगातार चलने में उन्हें कठिनाई हुई क्योंकि वे अच्छी तरह से सुसज्जित नहीं थे। समय की यही पुकार थी कि किसी भी तरह इन व्यक्तियों को बचाया जाए।

38 बी० आर० टी० ई० के अन्तर्गत 394 आर० एम० पी० एस० (110 आर० सी० सी०) के जी/91509 ओवरसीयर हरभजन सिंह ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए जोखिम भरे मौसम और अपने जीवन के गंभीर खतरे की परवाह किए बिना बचाव कार्य का संचालन किया। उन्होंने फंसे हुए श्रमिकों को निकालने के लिए ऊपर-नीचे जाकर व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण किया। इस कार्य में सहायता करने के लिए उनके पास केवल 30 सी० पी० श्रमिक थे। सभी मुश्किलों के बावजूद वह सड़क को साफ करने के काम की देखभाल करते रहे और बीमार व्यक्तियों को अपने कंधे पर उठाकर नीचे कैम्प में ले गए। इस प्रकार श्री हरभजन सिंह ने कम से कम 20 व्यक्तियों की जान बचाई जो अन्यथा बर्फ के काटने से बुरी तरह प्रभावित होते जिससे उनकी टांग काटनी पड़ जाती या उन्हें अपनी जान गवानी पड़ जाती।

श्री हरभजन सिंह ने अपने जीवन के गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए बहुत से असहाय लोगों की जान बचाने में अदम्य साहस, दृढ़-निश्चय, मानव के प्रति सहानुभूति एवं तत्परता का परिचय दिया।

69. श्री किशन गोपाल दवे (मरणोपरान्त)
समीप गोपाल भवन,
कलारियों का बास,
नागोरी गेट के अन्दर,
जोधपुर (राजस्थान)।

23 अप्रैल, 1988 को प्रातः 10.30 बजे जब श्रीमती कमला रसोईघर में खाना पका रही थी तभी सिलैंडर सप्लाई करने वाला टाकिंग गैस सिलेंडर देने आया। जैसे ही उसने वाल्व से कैप हटाई, गैस तेजी से रिसने लगी। उसने तत्काल परिवार के सदस्यों से बाहर चले जाने को कहा। चूंकि गैस तेजी से फैल रही थी, इस वजह से घर में आग लग गई और बहुत से व्यक्ति आग की चपेट में आ गए।

पीड़ित व्यक्तियों की चीख-पुकार सुनकर श्री किशन गोपाल दवे एवं एवं उसका छोटा भाई श्री ओम प्रकाश पड़ोस के कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ फंसे हुए लोगों को बचाने के लिए घटनास्थल पर आ पहुंचे। वे जलते हुए घर में एक लड़की को सफलतापूर्वक बाहर ले आए। एक और लड़की बुरी तरह से जल जाने के कारण पहले ही प्राण त्याग चुकी थी। श्री किशन गोपाल दवे ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना जलते हुए सिलेंडर को पकड़कर फेंक दिया। किन्तु ऐसा करते हुए वह स्वयं गंभीर रूप से जल गए और एक सप्ताह बाद अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई।

श्री किशन गोपाल दबे ने अपनी जान देकर अपने पड़ौसियों की जान माल की रक्षा करने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

सु० नीलकण्ठन, निदेशक

वित्त मंत्रालय

(आर्थिक कार्य विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 24 फरवरी 1989

स० एफ 16 (19) पी० डी०/87—भारत सरकार एतद्द्वारा वित्त मंत्रालय (आर्थिक कार्य विभाग) की दिनांक 30 जून, 1975 की अधिसूचना संख्या 16(1) पी० डी०/75 के अन्तर्गत घोषित और उसकी दिनांक 12-6-1985 की अधिसूचना संख्या 16(8) पी० डी०/84 के द्वारा विस्तारित गैर-सरकारी भविष्य, अधिवर्षता और उपदान निधियों के लिए विशेष जमा योजना में निम्नलिखित संशोधन करती है।

2. पैरा 6 के अन्तर्गत, निम्नलिखित टिप्पणी अन्तर्विष्ट होगी :

"टिप्पणी. 10 मार्च, 1988 की अधिसूचना संख्या 16(19) पी० डी०/87 द्वारा वर्ष 1988 के लिए लागू की गई अर्धवार्षिक आधार पर ब्याज की अदायगी, वर्ष 1989 के लिए भी विस्तारित की गई है। ब्याज पहली जुलाई, 1989 और पहली जनवरी, 1990 को देय होगा।"

बी० बालसुब्रह्मणियन, विशेष कार्य अधिकारी

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(संस्कृति विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 20 फरवरी 1989

संकल्प

सं० एफ० 23-53/83 सी० एच० 5 इस विभाग के दिनांक 21 अप्रैल, 1987 के समसंख्यक संकल्प में आंशिक संशोधन कर, केन्द्रीय संग्रहालय सलाहकार बोर्ड तथा इसकी स्थायी समिति का पुनर्गठन करते हुए, इस संकल्प के प्रकाशन की तारीख से बोर्ड, तथा इसकी स्थायी समिति की संरचना में निम्नलिखित अंगों को और जोड़ा जाता है :—

(i) बोर्ड की संरचना के भाग 8 के नीचे भारत सरकार के अधीन निम्नलिखित व्यक्ति को पदेन सदस्य के रूप में शामिल किया जाता है :

15. प्रोफेसर सुरेश दलाल, सदस्य, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली।

(ii) बोर्ड की स्थायी समिति की संरचना में निम्नलिखित व्यक्तियों को भी शामिल किया जाता है और उनके नाम दिनांक 21 अप्रैल, 1987 के संकल्प के पैरा 7 के अंतर्गत क्रम सं० 11 से 13 तक में शामिल किए जाएंगे, अर्थात् :

11. महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, जनपथ, नई दिल्ली।

12. निदेशक, राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला, ई/3, अलीगंज स्कीम, लखनऊ।

13. प्रोफेसर सुरेश दलाल, सदस्य, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली।

आदेश

1. आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी संबंधितों को भेज दी जाए।

2. यह भी आदेश दिया जाता है कि सामान्य सूचना के लिए संकल्प को भारत के राजपत्र में भी प्रकाशित किया जाए।

आर० सी० त्रिपाठी, संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 28 फरवरी, 1989

संकल्प

सं० एफ० 8-30/88 सी० एच०-I—भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के अनुसंधान, सर्वेक्षण कार्यक्रमों और अन्य कार्यकलापों की समय-समय पर समीक्षा करने तथा सरकार को उनकी अनुशंसा करने के उद्देश्य से शिक्षा और युवा सेवा संकल्प सं० एफ० 4-5/69 एस III दिनांक 1 सितम्बर, 1969 के अन्तर्गत एक सलाहकार समिति का गठन किया गया था तथा संस्कृति विभाग के संकल्प सं० एफ० 8-54/85 सी० एच०, दिनांक 26 जुलाई, 1985 द्वारा इसका पुनर्गठन किया गया था, राष्ट्रपति एतद्द्वारा भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण की सलाहकार समिति का पुनर्गठन करते हैं जिसकी संरचना और विचारार्थ विषय इस प्रकार होंगे :

(क) संरचना :

1. सचिव — अध्यक्ष
संस्कृति विभाग,
नई दिल्ली।

2. डा० आई० पी० सिंह, — उपाध्यक्ष
मानव विज्ञान विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली 110007.

3. प्रो० रघुबीर सिंह — सदस्य
मानव विज्ञान विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली 100007.

4. प्रो० बी० भल्ला — सदस्य
मानव विज्ञान विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ़-160014.

5. डा० ए० सी० भगवती, — सदस्य
मानव विज्ञान के प्रोफेसर,
गुवाहाटी विश्वविद्यालय,
गुवाहाटी 781014.

6. डा० पी० के० भौमिक, — सदस्य
मानव विज्ञान के प्रोफेसर,
कलकत्ता विश्वविद्यालय,
कलकत्ता।

7. डा० के० सी० त्रिपाठी, — सदस्य
मानव विज्ञान विभाग,
उत्कल विश्वविद्यालय
वाणी विहार,
भुवनेश्वर 751004.

8. डा० के० थिम्मा रेड्डी, डीन — सदस्य
इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विद्यालय,
तेलुगु विश्वविद्यालय,
श्रीसैलम कैम्पस,
श्रीसैलम 518001.

9. डा० राधिकासंद, — सदस्य
मानव विज्ञान के प्रोफेसर,
ए० एन० सिन्हा संस्थान,
पटना।

10. डा० बी० पकेम, — सदस्य
राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष
उत्तर पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय,
मयूरभंज काम्पलेक्स,
मैसूर 570006.

11. डा० फ्रांसिस एक्का, सदस्य
उप निदेशक,
केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान,
मैसूर 570006.

12. डा० एन० एन० श्याम सदस्य
निदेशक,
जनजातीय अनुसंधान संस्थान,
अशोकनगर,
उदयपुर।

13. डा० डी० बी० राववराव, सदस्य
निदेशक,
जनजातीय अनुसंधान संस्थान,
तमिल विश्वविद्यालय,
उद्गमण्डलम-643004.

14. डा० पी० के० श्रीवास्तव, सदस्य
प्रोफेसर एवं मानव विज्ञान विभागाध्यक्ष,
डा० हरीसिंह गौड़, विश्वविद्यालय,
सागर 470003.

15. प्रो० ए० आर० मोमिन, सदस्य
सांस्कृतिक मानव विज्ञान के रीडर,
समाज शास्त्र विभाग,
बम्बई विश्वविद्यालय कैम्पस,
कलीना,
बम्बई 400098

16. महा निदेशक सदस्य
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,
जनपथ,
नई दिल्ली।

17. महा-रजिस्ट्रीयक, सदस्य
भारत की जनगणना,
नई दिल्ली।

18. डा० श्याम सिंह शशि, सदस्य
निदेशक, प्रकाशन प्रभाग,
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय,
पटियाला हाउस,
नई दिल्ली।

19. योजना आयोग के प्रतिनिधि, सदस्य
योजना भवन,
नई दिल्ली।

20. महानिदेशक, सदस्य
भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण,
नई दिल्ली।

21. निदेशक, सदस्य सचिव
भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण,
कलकत्ता।

(ख) विचारार्थ विषय

(i) भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के अनुसंधान, सर्वेक्षण कार्यक्रमों और अन्य कार्यकलापों की समय-समय पर समीक्षा करना और उनके संबंध में सरकार को सिफारिश करना ;

(ii) सहयोगी अनुसंधान परियोजनाओं, कार्मिकों के आदान-प्रदान, विशेष अध्ययन, सेमिनारों, संगोष्ठियों और प्रकाशनों के विशेष संदर्भ में भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण और विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान विभागों के बीच सहयोग के विशेष उपायों की सिफारिश करना; और

(iii) उन सभी मामलों पर सलाह देना जो सरकार द्वारा इसे विशेष रूप से भेजे गए हों।

सलाहकार समिति के सदस्यों का कार्यकाल संकल्प जारी किए जाने की तारीख से तीन वर्ष तक के लिए होगा। तथापि, सरकार तीन वर्ष की अवधि पूरी होने से पूर्व ही बिना कोई कारण बताए किसी भी सदस्य की सदस्यता समाप्त कर सकती है अथवा सलाहकार समिति का पूरी तरह से पुनर्गठन कर सकती है।

समिति की बैठक आवश्यकतानुसार प्राय. बुलाई जाएगी लेकिन वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य बुलाई जाएगी।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक-एक प्रति भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण की सलाहकार समिति के सभी सदस्यों को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि सामान्य सूचना के लिए संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

एन० सिकदर, उप शिक्षा सलाहकार

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 20 फरवरी, 1989

संकल्प

सं० 15/12/88 आई० पी० एंड एम० सी०.-भारतीय जनसंचार संस्थान, जिसे देश में जनसंचार के माध्यम के रूप में प्रशिक्षण, अनुसंधान और विकास के लिए स्थापित किया गया था, उसके कार्य निष्पादन की पुनरीक्षा के लिए एक समिति का गठन करने का निर्णय लिया गया है। समिति के निम्नलिखित सदस्य होंगे :

1. प्रो० एम० एन० श्रीनिवास, अध्यक्ष
78 ए, बेन्सन क्रास रोड,
बंगलौर 560042.

2. श्री यू० सी० तिवारी, सदस्य
49, मंदाकिनी इन्क्लेव,
नई दिल्ली 19.

3. श्री रामू पटेल, सदस्य
संपादक, वेस्टर्न टाइम्स,
गुजरात समाचार भवन,
खानपुर,
अहमदाबाद 300001.

4. एम० जे० अकबर, सदस्य
संपादक, दि टेलीग्राफ,
609, प्रफुल्ल सरकार स्ट्रीट,
कलकत्ता 700001.

5. श्री के० एस० कामिक, सदस्य
निदेशक,
विकास और शैक्षिक संचार एकक,
एस० ए० सी० पी० ओ०,
अहमदाबाद।

6. श्री आई० राम मोहन राव, सदस्य
प्रधान सूचना अधिकारी,
पत्र सूचना कार्यालय,
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली।

7. श्री के० एस० वैद्यनाथन, सदस्य
संयुक्त सचिव,
सूचना और प्रसारण मंत्रालय,

सदस्य सचिव

8. डा० जे० एस० यादव,
निदेशक,
भारतीय जनसंचार संस्थान,
शहीद जीत सिंह मार्ग,
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय परिसर,
नई दिल्ली ।

2. समिति निम्नलिखित की जांच करेगी:

(1) 1972–73 में की गई पिछली पुनरीक्षा से संस्थान के निष्पादन का सामान्य मूल्यांकन करना ;

(2) यह जांच करना कि संस्थान ने भारतीय जनसंचार संस्थान के उद्देश्यों जैसा कि एसोसिएशन के ज्ञापन में प्रतिपादित है, को किस सीमा तक पूरा करने में योगदान दिया है ;

(3) यह जांच करना कि क्या प्रासंगिक अवधि में किया गया खर्च, प्राप्त परिणामों के अनुरूप था ;

(4) शिक्षण, अध्यापन और अनुसंधान के उन क्षेत्रों का पता लगाना जिनमें संस्थान को, आगामी वर्षों में यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह माध्यम, माध्यम के लोगों, माध्यम के उपयोग कर्ताओं और माध्यम के प्रैक्टीशनरों की बदली और बदलती अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए, यह समिति विद्यमान पाठ्यक्रम में संशोधन अथवा नया पाठ्यक्रम लागू करने का भी सुझाव देगी, जैसा ठीक समझेगी ।

3. समिति अपनी कार्यप्रणाली स्वयं तैयार करेगी और छः माह की [अव]धि के अंतर्गत अपनी रिपोर्ट देगी । समिति का मुख्यालय नई दिल्ली होगा ।

4. पुनरीक्षा समिति की बैठकों के मामले में यात्रा भत्ते/दैनिक भत्ते होने वाला व्यय उस विभाग/कार्यालय द्वारा वहन किया जाएगा जिसमें [सर]कारी सदस्य कार्यरत है । गैर सरकारी अध्यक्ष/सदस्य वित्त मंत्रालय [(व्य]य विभाग) के समय-समय पर यथा संशोधित दिनांक 5 सितम्बर, [19]80 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 6/25/ई 4/59 के अनुसार यात्रा और [दैनि]क भत्ता पाने के हकदार होंगे ।

आदेश

संकल्प की एक प्रति समिति के अध्यक्ष/सदस्यों, "भारत सरकार" के [सभ]ी मंत्रालयों और विभागों ए० जी० सी० आर०/डी० ए० सी० आर०, नई [दि]ल्ली को भेजने का आदेश दिया जाता है ।

सामान्य सूचना के लिए आदेश को भारत के राजपत्र में प्रकाशित करने [क]ा आदेश दिया जाता है ।

के० एस० बैसवान, संयुक्त सचिव

उद्योग मंत्रालय

औद्योगिक विकास विभाग

विकास आयुक्त (लघु उद्योग) का कार्यालय

नई दिल्ली, दिनांक 14 मार्च, 1989

संकल्प

सं० 1(1)/89-ल० उ० बोर्ड--भारत सरकार, लघु उद्योग बोर्ड को [निम्]न प्रकार से पुनर्गठित करती है :--

[अध्]यक्ष :

1. उद्योग मन्त्री,
भारत सरकार,
उद्योग भवन, नई दिल्ली ।

सदस्य :

2. वाणिज्य मन्त्री,
भारत सरकार
उद्योग भवन, नई दिल्ली ।

3. इस्पात एवं खान मन्त्री,
भारत सरकार,
उद्योग भवन, नई दिल्ली ।

4. उद्योग मन्त्रालय,
औद्योगिक विकास विभाग में राज्य मंत्री,
उद्योग भवन, नई दिल्ली ।

5. पैट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस,
राज्य मंत्री, भारत सरकार,
शास्त्री भवन, नई दिल्ली ।

6. कृषि मन्त्रालय,
ग्रामीण विकास विभाग में राज्य मंत्री,
भारत सरकार,
कृषि भवन नई दिल्ली ।

7. वित्त मन्त्रालय,
राज्य मंत्री (राजस्व),
भारत सरकार, नार्थ ब्लाक,
नई दिल्ली-110001 ।

8. श्री बीरेन सिंह इंगटी,
योजना मन्त्रालय तथा कार्यक्रम का कार्यान्वियन मन्त्रालय में
राज्य मंत्री, भारत सरकार,
सरदार पटेल भवन, नई दिल्ली-110001 ।

9. खाद्य प्रक्रिया उद्योग में राज्य मंत्री,
परिवहन भवन, संसद मार्ग,
नई दिल्ली-110001

10. मानव संसाधन विकास मन्त्रालय,
युवा मामले एवं खेल और महिला तथा बाल विकास विभाग में
राज्य मन्त्री, भारत सरकार शास्त्री भवन,
नई दिल्ली ।

11. सदस्य (उद्योग)
योजना आयोग,
संसद मार्ग, नई दिल्ली ।

12. सचिव,
औद्योगिक विकास विभाग,
उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार,
उद्योग भवन, नई दिल्ली ।

13. सचिव,
वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार,
उद्योग भवन, नई दिल्ली ।

14. सचिव, (इस्पात),
इस्पात एवं खान मन्त्रालय, भारत सरकार,
उद्योग भवन, नई दिल्ली ।

15. सचिव (बैंकिंग),
वित्त मंत्रालय, भारत सरकार,
नार्थ ब्लाक, नई दिल्ली ।

16. सचिव,
खाद्य प्रक्रिया उद्योग मंत्रालय, परिवहन भवन,
संसद मार्ग, नई दिल्ली ।

17. सचिव, (महिला एवं बाल विकास),
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार,
[शास्त्री भवन, नई] दिल्ली ।

सदस्य :

18. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
आंध्र प्रदेश सरकार,
हैदराबाद ।

19. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
अरुणाचल प्रदेश सरकार,
इटानगर ।

20. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
असम सरकार,
दिसपुर ।

21. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
बिहार सरकार,
पटना ।

22. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
गुजरात सरकार,
अहमदाबाद ।

23. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
गोवा सरकार,
पणजी ।

24. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
हरियाणा सरकार,
चण्डीगढ़ ।

25. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
हिमाचल प्रदेश सरकार,
शिमला ।

26. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
जम्मू एवं कश्मीर सरकार,
श्रीनगर ।

27. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
कर्नाटक सरकार,
बंगलौर ।

28. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
केरल, सरकार, त्रिवेन्द्रम ।

29. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
मध्य प्रदेश सरकार, भोपाल ।

30. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
महाराष्ट्र सरकार, बम्बई ।

31. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
मणिपुर सरकार, इम्फाल ।

32. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
मेघालय, सरकार, शिलांग ।

33. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
मिजोरम सरकार, एजवाल ।

34. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
नागालैण्ड सरकार, कोहिमा ।

35. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
उड़ीसा सरकार, भुवनेश्वर ।

36. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
पंजाब सरकार, चण्डीगढ़ ।

37. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
राजस्थान सरकार, जयपुर ।

38. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
सिक्किम सरकार, गंगटोक ।

सदस्य :

39. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
तमिलनाडु सरकार, मद्रास ।

40. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
त्रिपुरा सरकार, अगरतला ।

41. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ ।

42. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
पश्चिम बंगाल, सरकार, कलकत्ता ।

43. उप राज्यपाल,
अण्डमान एवं निकोबार द्वीप,
पोर्ट ब्लेयर ।

44. उप राज्यपाल,
दमन एवं दीव ।

45. मुख्य आयुक्त,
चण्डीगढ़ प्रशासन, चण्डीगढ़ ।

46. प्रशासक,
दादरा एवं नगर हवेली,
सिलवासा ।

47. प्रशासक,
लक्षद्वीप, कवरत्ति,
एच० पी० ओ, कालीकट ।

48. मुख्य कार्यकारी पार्षद,
दिल्ली प्रशासन, दिल्ली ।

49. लघु उद्योगों के प्रभारी मंत्री,
पांडिचेरी सरकार, पांडिचेरी

50. राज्यपाल,
भारतीय रिजर्व बैंक,
5, कारमिकेल मार्ग,
बम्बई-400 026 ।

51. अध्यक्ष,
भारतीय औद्योगिक विकास बैंक,
227, विनय के० शाह मार्ग, नरीमन प्वाइंट,
बम्बई ।

52. अध्यक्ष,
भारतीय स्टेट बैंक,
केन्द्रीय कार्यालय, न्यू एडमिनिस्ट्रेटिव बिल्डिंग,
मादाम कामा मार्ग, बम्बई-400 021 ।

53. अध्यक्ष,
भारतीय औद्योगिक वित्त निगम,
बैंक आफ बड़ौदा भवन, 16 संसद मार्ग,
नई दिल्ली-110001 ।

54. अध्यक्ष,
राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक,
पूनम चैम्बर, शिवसागर एस्टेट,
डा० ऐनी बेसेंट मार्ग, बम्बई-400 018 ।

55. अध्यक्ष,
राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लि०,
ओखला औद्योगिक एस्टेट,
नई दिल्ली ।

56. अध्यक्ष,
भारतीय राज्य व्यापार निगम लि०,
चन्द्रलोक भवन, 36 जनपथ,
नई दिल्ली-110001 ।

सदस्य :

57. अध्यक्ष,
भारतीय खनिज एवं धातु व्यापार निगम लि०,
एक्सप्रेस भवन, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-110002।

58. अध्यक्ष,
भारतीय इस्पात प्राधिकरण
इस्पात भवन, सी० जी० ओ० काम्प्लैक्स,
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003।

59. भारतीय पैट्रो-कैमिकल्स कार्पोरेशन लि०,
पी० ओ० पैट्रो कैमिकल्स, बड़ौदरा,
(गुजरात)।

60. अध्यक्ष,
खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग ग्रामोदय,
3 इर्ला मार्ग, विले पार्ले, (पश्चिम)
बम्बई-400 056।

61. विकास आयुक्त,
हस्तशिल्प, वेस्ट ब्लाक-7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-110021।

62. विकास आयुक्त, (हथकरघा),
वाणिज्य मन्त्रालय, वस्त्र विभाग,
उद्योग भवन, नई दिल्ली।

63. अध्यक्ष,
भारतीय लघु उद्योग निगम परिषद,
फ्लैट नं० 910, पद्मा टावर, राजेन्द्र प्लेस,
नई दिल्ली।

64. अध्यक्ष,
तमिलनाडु महिला विकास निगम लि०,
116, डा० राधाकृष्णन सलाई, माइलापुर,
मद्रास-600 004।

65. अध्यक्ष,
फैडरेशन आफ एसोसिएशन आफ स्माल इंडस्ट्रीज आफ इंडिया,
(फासी), 23-बी/2, गुरुगोविन्द सिंह मार्ग,
नई दिल्ली-110 005।

66. अध्यक्ष,
भारतीय लघु उद्योग परिषद,
1ए०, एस० एन० बनर्जी रोड, कलकत्ता-700 013।

67. अध्यक्ष,
नेशनल एलायंस आफ यंग एन्टरप्रेन्यूर्स,
301-302, सरस्वती भवन, 37 नेहरू प्लेस,
नई दिल्ली।

68. अध्यक्ष,
फैडरेशन आफ इंडिया, चैम्बर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री,
तानसेन मार्ग, नई दिल्ली।

69. अध्यक्ष,
अखिल भारतीय निर्माता संघ,
जीवन सहकार, सर पी० एम० रोड
बम्बई।

70. सचिव
फैडरेशन आफ इंजीनियरिंग इंडस्ट्रीज आफ इंडिया,
बी-30, सागर अपार्टमेंटस, 6, तिलक मार्ग,
नई दिल्ली-110001।

सदस्य :

71. अध्यक्ष,
इंडियन कौंसिल आफ वीमन एंटरप्रेन्योर्स, (आई० सी० डब्ल्यू० ई०)
ए-7/2, न्यू फैन्ड्स कालोनी,
नई दिल्ली-110065।

72. सह-अध्यक्ष,
नाये (एन० ए० वाई० ई०) का महिला स्कंध,
301-302, सरस्वती भवन, 37, नेहरू प्लेस,
नई दिल्ली।

73. श्रीमती अलका अग्रवाल,
अध्यक्ष, आई० सी० एम० आई० की महिला स्कंध,
38/1 एफ, मानीकतला मेन रोड, कलकत्ता-700051।

74. श्री संतोष कुमार बगरोडिया,
संसद सदस्य, (राज्य सभा),
ई-12, ग्रेटर कैलाश-2, नई दिल्ली-48।

75. श्री वासुदेव महापात्र,
संसद सदस्य (राज्य सभा),
138, साउथ एवेन्यू,
नई दिल्ली-110011।

76. श्री नन्द लाल चौधरी,
संसद सदस्य (लोक सभा),
92, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली-110011।

77. श्री श्रीपति मिश्र,
संसद सदस्य, (लोक सभा),
12, तीन मूर्ति लेन,
नई दिल्ली-110011।

78. अध्यक्ष,
आंध्र प्रदेश लघु उद्योग एसोसिएशन,
औद्योगिक एस्टेट,
विजयवाड़ा (आं० प्र०)।

79. अध्यक्ष,
गुवाहाटी इंडस्ट्रीज एस्टेट एसोसिएशन,
औद्योगिक एस्टेट,
गुवाहाटी-781 021 (असम)।

80. अध्यक्ष,
बिहार लघु उद्योग एसोसिएशन,
204, नेल गिरि भवन, बोरिंग कनाल रोड,
पटना (बिहार)।

81. अध्यक्ष,
ओखला इंडस्ट्रीज एसोसिएशन,
ओखला इंडस्ट्रियल एस्टेट,
नई दिल्ली-110 020।

82. अध्यक्ष,
गुजरात राज्य लघु उद्योग फैडरेशन,
गन हाउस, खानपुर,
अहमदाबाद।

83. अध्यक्ष,
फैडरेशन आफ इंडस्ट्रीज एसोसिएशन,
सी-1/615, जी० आई० डी० सी० एस्टेट,
जिला सुरेन्द्र नगर, वर्धवान सिटी,
(गुजरात)।

सदस्य :

84. अध्यक्ष,
फरीदाबाद लघु उद्योग एसोसिएशन,
291, सेक्टर-21,
फरीदाबाद-121005 (हरियाणा)

85. अध्यक्ष,
हिमाचल प्रदेश लघु उद्योग एसोसिएशन,
सोलन।

86. अध्यक्ष,
जम्मू व काश्मीर लघु उद्योग एसोसिएशन,
श्रीनगर।

87. अध्यक्ष,
कर्नाटक लघु उद्योग एसोसिएशन,
2/106, 13वां क्रास, मगाडी मार्ग, चार्ड रोड,
विजय नगर, बेंगलूर-560 040

88. अध्यक्ष,
केरल राज्य लघु उद्योग एसोसिएशन,
उधरा भवन, कारंक्कट मार्ग,
कोचीन-682 016

89. अध्यक्ष,
एसोसिएशन आफ इंडस्ट्रीज मध्य प्रदेश,
औद्योगिक एस्टेट, पोलो ग्राउन्ड,
इन्दौर-452 003

90. अध्यक्ष,
महाराष्ट्र लघु उद्योग एसोसिएशन,
बम्बई।

91. अध्यक्ष,
उड़ीसा लघु उद्योग एसोसिएशन,
औद्योगिक एस्टेट
कटक-753 010।

92. अध्यक्ष,
द फडरेशन आफ पंजाब स्माल इंडस्ट्रीज एसोसिएशन,
पंजाब ट्रेड सैंटर, कम्पलैक्स,
भारतीय स्टेट बैंक के निकट मिल्लर गंज,
लुधियाना-141003

93. अध्यक्ष,
फेडरेशन आफ एसोसिएशन, आफ स्माल इंडस्ट्रीज आफ राजस्थान,
राजस्थान चैम्बर आफ कामर्स भवन, एम० आई० रोड,
जयपुर-302 001

94. अध्यक्ष,
तमिलनाडु लघु उद्योग एसोसिएशन,
10, जी० एस० टी० रोड, गुंडी,
मद्रास-600 032

95. अध्यक्ष,
फैडरेशन आफ एसोसिएशन,
कुटीर एवं लघु उद्योग,
अगरतल्ला (त्रिपुरा)।

96. अध्यक्ष,
आगरा आयरन फाउन्ड्रर्स एसोसिएशन,
88, उत्तरी विजय नगर कालोनी,
आगरा-282 004

सदस्य :

97. अध्यक्ष,
फैडरेशन आफ एसोसिएशन आफ काटेज एंड स्माल स्केल इंडस्ट्री
21-1-1, श्रीकरा, कलकत्ता-700 014

98. श्रीमती अरुणा गाला,
एम० डी० जय इलैक्ट्रानिक्स, मकान नं० 12, तिरुचानूर रोड,
पद्मावती पुरम, तिरुपति (आ० प्र०)।

99. श्री बी० रामकृष्ण,
बन्दर रोड, विजयवाड़ा (आन्ध्र प्रदेश)।

100. श्री चक्रधारी अग्रवाल,
महासचिव, डब्ल्यू० ए० एस० एम० ई०,
27, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019

101. श्री हरभजन सिंह,
मल्टीपोर फिल्टरेशन एंड सेपरेशन,
बी-29, कैलाश कालोनी,
नई दिल्ली।

102. श्री जोगिन्दर कुमार,
अध्यक्ष,
यूनाइटेड साइकिल एंड पार्टस मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन,
गिल रोड, लुधियाना-141 003

103. श्री के० एल० नंजप्पा,
पूर्व वि० आ० (ल० उ०), 96, सरपेंटीन रोड,
कुमार पार्क, पश्चिम विस्तार,
बेंगलूर-560 020

104. श्री एस० एस० बागडी,
नया श्रीनगर, कांग्रेस रोड,
बम्बई-400 006

105. श्री एम० एम० पार्थसारथी,
अध्यक्ष,
स्माल इंडस्ट्रीज एंड बिजनेस इंटेप्रेन्युर्स एसोसिएशन,
164 माउन्ट रोड, सैडेपेट, मद्रास।

106. डा० राम के० वेपा,
पूर्व वि०आ० (ल० उ०), डी-301, योग विहार, सेक्टर-12,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110 022।

सदस्य-सचिव

107. विकास आयुक्त,
लघु उद्योग एवं पदेन अपर सचिव, उद्योग मंत्रालय,
भारत सरकार, निर्माण भवन,
नई दिल्ली-110 011

2. पुनर्गठित बोर्ड का कार्य होगा, सरकार को लघु उद्योगों के विकास से सम्बन्धित सभी नीति विषयक मामलों पर परामर्श देना।

3. बोर्ड को विशिष्ट प्रयोजनों से समिति (समितियां) गठित करने की शक्ति होगी। बोर्ड के पास जब भी आवश्यक होगा बैठक में व्यक्तियों को आमंत्रित करने की भी शक्ति होगी।

4. लघु उद्योग बोर्ड का कार्यकाल 2 वर्ष का होगा जो एक अप्रैल, 1989 से आरम्भ होगा।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सभी सम्बन्धितों को भेज दी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आम जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में भी प्रकाशित किया जाए।

पी० के० गोयल
निदेशक (ल० उ० मंत्री)

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th March 1989

No. 18-Pres./89.—The President is pleased to approve the award of "Sarvottam Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Master Saurabh Oberoi, (*Posthumous*)
S/o Major S. K. Oberoi,
84 Armed Regiment,
C/o 56 APO.

On the 18th January, 1987, at about 11.00 A.M., four children named Master Shantanu Oberoi (10 years), Master Saurabh Oberoi (8 years), Master Ankur Khurana (9 years) and Kumari Aastha Khurana (6 years) were playing near a 20-25 feet deep lake situated at Sadhuwali Military Area. None of these children knew swimming. Kumari Aastha Khurana suddenly slipped and fell into the tank and started drowning. On seeing this, Master Saurabh Oberoi jumped into the tank to save her but he himself started drowning. Seeing them drowning, Master Ankur Khurana, elder brother of Kumari Aastha Khurana, also jumped into the tank. He was able to bring both of them to the shore, but could not bring them out as the shore was high and slippery. As Ankur Khurana was struggling, Master Shantanu who was on the bank of the tank shouting for help, gave him support with the help of a branch of a tree. A sentry passing by heard the shouts, ran to the spot and brought the three children out, but by that time, Kumari Aastha Khurana and Master Saurabh Oberoi were dead.

Master Saurabh Oberoi showed courage of the highest order in his effort to save the life of a drowning girl and lost his own life in the process.

2. Shri Jai Prakash Alias Sukke.
Village Duhai,
Police Station Muradnagar,
District Ghaziabad (U.P.).

On the 1st January, 1987, at about 6.00 P.M., Master Vinod aged about 14 years, was riding a cycle with a two years old child seated in the front. When the cycle reached near a well which had no platform around it, all of a sudden a child came in front of the cycle. While trying to save the child, Master Vinod lost his balance and fell into the well alongwith the child who was seated on the cycle. A number of persons gathered on the spot but no one dared to jump into the well to save them. On seeing this, Shri Jai Prakash alias Sukke jumped into the well and rescued both the boys.

Shri Jai Prakash alias Sukke displayed exemplary courage and promptitude in saving two lives from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

3. Shri Bhagwan Das Gautam, (*Posthumous*)
Village & Post Bijoli,
Police Station Kharkhoda.
District Meerut (U.P.).

On the 12th April, 1982, at Jahidpur, District Meerut, Shri Munshi Lal Harit and his 14 years old son Master Devender Kumar were engulfed in the flames of fire spread due to splashing of petrol. Shri Bhagwan Das Gautam, who was passing that way, saw this pathetic scene and in utter disregard to the danger of his life, jumped into the flames and brought both the persons out of fire. But in the process he himself suffered severe burn injuries to which he succumbed in the hospital.

Shri Bhagwan Das Gautam exhibited courage of the highest order and great concern for human life and sacrificed his own life in saving the lives of two unknown persons trapped in petrol fire.

No. 19-Pres./89.—The President is pleased to approve the award of "Uttam Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Shri Bhupinder Singh,
C/o Regional Manager,
Himachal Road Transport Corporation,
Kulu (Himachal Pradesh).

On the 14th October, 1986, Shri Bhupinder Singh, a driver of Himachal Road Transport Corporation was travelling in Bus No. IE 896 on Haridwar-Manali route. The bus was full of passengers. The driver of the bus suffered a severe heart attack and died on steering while the bus was in motion. Shri Bhupinder Singh, who was sitting behind the driver, at once took control of the bus and thereby averted a fatal accident.

On the midnight of 4th May, 1987, while Shri Bhupinder Singh was driving Bus No. HIE 589 (Manali-Haridwar service) with fifty passengers on the bus was fired upon repeatedly by the terrorists near Dera Bassi (Punjab). Shri Bhupinder Singh displayed extraordinary courage and presence of mind and did not stop the bus despite the fact that the front and rear wind shield glasses and middle part of the bus were hit with several bullets, including one passing over his head and finally drove away the bus beyond the reach of terrorists.

Shri Bhupinder Singh saved the lives of passengers by exhibiting extraordinary presence of mind and courage on both the occasions.

2. Shri Ram Bahadur,
Village Samodi,
Post Office Bainajantha,
Tehsil Ghumarwin,
District Bilaspur (H.P.).

On the 26th August, 1986, at about 8.30 P.M., a pedal boat capsized and was sinking in Govindsagar lake, Bilaspur. A hue and cry was made by the passengers on board. On hearing this, Shri Ram Bahadur, a boat keeper of H.P. Naval N.C.C. Unit, who was on duty at the nearby Lugunu Ghat, rushed to the site at once. Though there were many civilians at the ghat, none came forward to help. He took a naval boat and rushed to the site, where all the occupants of ill-fated boat had gone down to the bottom of the lake. Unmindful of the grave risk involved to his own life, he dived down twice to the bottom of the lake and recovered seven persons in a semi-conscious state. He rendered first aid to the victims inside the boat and brought them ashore.

Shri Ram Bahadur showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of seven persons.

3. Shri S. Surendran, (*Posthumous*)
Charuvila Puthan Veedu,
Pandithitta,
Post Office Thalavoor,
Via Kunnicoda,
District Quilon (Kerala).

On the 25th March, 1987, at Pandithitta village of Quilon District, there was an explosion in a shed belonging to Shri K. Sreedharan, where explosive materials were stored for manufacture of fire works, and the shed was engulfed in fire. A few persons were trapped inside the burning shed, which was near Shri Sreedharan's residence. Two labourers sustained injuries and two others fled from the scene to save themselves.

Shri K. Sreedharan's son Shri S. Surendran of 436 Field Ambulance C/o 56 APO, who had come on leave, sensed the gravity of the situation and rushed to the spot. He, unmindful of the grave risk to his own life, entered the burning shed to save the lives of persons trapped inside. In the process Shri S. Surendran sustained major injuries and died on the 28th March, 1988.

4. Shri S. Lawmzuala,
Tuipui, Darzokai,
Post Office Hnahthial,
Mizoram.

On the 28th April, 1987, at about 1.00 P.M., a marboat, with jeeps, some local women, some soldiers of Assam Rifles and their families aboard overturned in the middle of Kaladan river, Shri S. Lawmzuala who happened to be there saw one soldier falling off the platform of the boat with his rifle still slung on his shoulder. Immediately he rushed to the water line, united a boat which was moored there and started rowing hard on the fast current towards the man. By now the man had lost his rifle and was struggling in the water as he did not know swimming. With tremendous efforts he reached the drowning man and lifted him out of water.

Shri S. Lawmzuala then saw another man floating past in the current barely holding on to a gunny bag. He immediately reached him and also rescued him as well as recovered the lost rifle.

It was due to his most valient efforts, at the grave risk to his own life that Shri S. Lawmzuala rescued two men from drowning.

5. Swami Sarvanand,
Rajkiya Ashram,
At & Post Bondkala,
Tehsil Dadri,
District Bhiwani (Haryana).

On the 14th April, 1986, during the Kumbh Mela at Hardwar where about 50 to 70 lakh devotees had gathered to have a holy dip, there was a stampede as a result of which a number of persons got injured and many more fell on the ground and came under the feet of running persons. Swami Sarvanand realised the gravity of the situation and without caring for his personal safety, plunged himself into the rescue operation. His courageous and determined efforts were tremendously instrumental in rescuing several persons, who had been trapped in the stampede and in the process he was himself badly injured and fell on the ground.

6. Shri Karan Singh Saini alias Kunwar Prasad Saini,
Resident of Maliana,
Police Station Sadar Bazar,
Mathura (U.P.).

On the 22nd July, 1986, at about 4.00 P.M., five boys bathing in river Jamuna at Mahadeva Ghat started drowning and shouted for help. Shri Karan Singh Saini alias Kunwar Prasad Saini who was grazing his cows nearby, heard their cries and immediately jumped into the river in complete disregard for his personal safety and rescued 4 out of the 5 boys. Unfortunately one boy drowned.

Shri Karan Singh Saini alias Kunwar Prasad Saini showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of four boys from drowning unmindful of the grave risk involved to his own safety.

7. JC-125264 Subedar Ajmer Singh,
14 Sikh Light Infantry,
C/o 56 APO.

On the 8th July, 1987, a party of thirty jawans of the Sikh Light Infantry led by Subedar Ajmer Singh boarded the Delhi-bound Dakshin Express at Hyderabad to proceed to Mathura Junction. Enroute at about 0430 hours on the 9th July, 1987, a loud thud was heard and the passengers woke up. Subedar Ajmer Singh came out to find out what had happened and saw some front bogies of the train derailed and overturned due to raging flash floods. He immediately swung into rescue operations with his men.

Subedar Ajmer Singh immediately rallied all his men and motivated them to rescue the passengers from derailed bogies strewn around. He personally led them from bogie to bogie through swift muddy waters and started rescue operations in the most difficult conditions. Two compartments were washed away approximately 150 feet from the track. From these a 14 years old girl, the lone survivor of these bogies, was recovered after breaking open the window bars of the coach.

Subedar Ajmer Singh motivated, activated and led his men against all odds and risks thereby saving more than 70 precious human lives from sure death.

8. JC-160615 Nb Sub Ishwar Singh Sewhag,
AOC Centre,
Secunderabad.

On the 8th July, 1987, Nb Subedar Ishwar Singh Sewhag of Army Ordnance Corps Centre was proceeding to Delhi by 21 Up Dikshin Express which met with an accident near Mancherial at about 4.30 A.M. on the 9th July 1987. He organised a few Army Personnel travelling in the train and started rescue work. He, without fear and with complete disregard to personal safety, alongwith others, saved the lives of approximately 17 persons and also extricated nearly 25 bodies from the inundated coaches. They undertook these rescue operations at the time when water level was neck deep and water was gushing through with great speed. Some of the rescued persons were given first aid.

Nb. Subedara Ishwar Singh Sewhag showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of victims of train derailment without caring for the risk involved to his own life.

No. 20-Pres./89.—The President is pleased to approve the award of "Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Shri Ruge Mihu, (*Posthumous*)
Village Gipulin,
P.O. Anini,
Debang Valley District,
Arunachal Pradesh.

On the 16th June, 1987, Shri Ruge Mihu and another person Shri Reko Mihu were fishing in a river near their village. Shri Reko Mihu accidentally slipped and fell into the river. Seeing his companion being carried away by the current, Shri Ruge Mihu jumped into the river and rescued him. Unfortunately, he himself could not come out of water and was swept away by the torrential current.

Shri Ruge Mihu thus saved the life of his companion at the cost of his own life.

2. Shri Churamani Saikia,,
Upper Katani Gaon,
Post Office and Police Station Kamalabri,
Manjuli, District Jorhat (Assam).

On the 18th October, 1985, while travelling by the Kamalaberi Nimati ferry near Nimatighat, an infant fell into the river Brahmaputra from the arms of her mother. Shri Churamani Saikia who was also in the ferry immediately rushed and jumped into the swift current of the river and rescued the baby.

Shri Churamani Saikia showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of the baby from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life.

3. Master Sumeet,
6/5 Vidyut Nagar,
Hissar (Haryana).

On the 2nd February, 1985, Master Vivek, a seven years old student of M. D. Public School, Narwana, who was playing near a 4 feet deep underground water tank was pushed into the tank by another child, and he was drowning. Sumeet, a 6 years and 10 months old students of the same school, who was also playing nearby, noticed this and immediately swung into action. He firmly caught hold of a nearby fence with one hand and put the other hand deep inside the tank within his reach. He succeeded in catching hold of the hand of the drowning child and brought him out of the tank.

Even though a child of less than 7 years, Master Sumeet, at the gravest risk to his own life, saved the life of his friend and thus set an example for emulation by his fellow students.

4. Shri Farid Mohammed,
House No. 7, Roura Sector No. 3,
District Bilaspur (Himachal Pradesh).

On the 4th September, 1987, Shri Farid Mohammed heard the cries for help from Nadim Akhtar, aged 9 years and Sahid Ali aged 10 years who were drowning in Govind Sagar Lake. He immediately rushed to the site of accident and found that the boys had gone down to the bottom of the lake. Unmindful of the grave risk to his own life, Shri Farid Mohammed dived down many times to the bottom and recovered both the children. He brought them ashore and rendered necessary first-aid, and thus saved their precious lives.

Shri Farid Mohammed showed conspicuous courage and promptitude in saving two lives unmindful of the risk involved to his own life.

5. Master Sudhir Arora,
House No. 1232, Sector 11,
Government Quarters, Panchkula,
Haryana.

On the 13th January, 1986, at Panchkula, Master Gaurav, a two years old boy, accidentally fell into a fire pit made for celebrating Lohri. Within seconds the boy's clothes were ablaze. Seeing this Master Sudhir Arora rushed to save the boys and in the process his own clothes caught fire. Some adults nearby saw their plight and rescued them.

Master Sudhir Arora being only 7 years of age displayed conspicuous courage and promptitude and was instrumental

i saving the life of the child at grave risk involved to his wn safety.

6. Master Muzafar Ali,
5-G Tulsi Bagh,
Srinagar,
Jammu & Kashmir.

On the 26th March, 1987, at 2.00 A.M. a truck rolled own about 900 ft. at Khoni Nalla on the Srinagar Jammu lational Highway. It was raining heavily. Besides the river and the cleaner of the truck, one lady Shrimati Sara nd her two sons Master Muzzafar Ali and Showkat Ali were njured. The cleaner succumbed to the injuries in the hosital. The lady and her younger son Showkat Ali were eriously injured and rendered unconscious.

Master Muzzafar Ali, aged 8½ years, though also seriously njured but conscious worked swiftly and bravely. He imnediately put both his mother and younger brother under a ush and put a blanket over them. Without losing his wits, he tarted crying and looking for help and finally in the morning ours after a lapse of about 6 hours, he attracted the attenion of a Gujjar living nearby and sought his help. The Gujjar brought the injured and unconscious lady and her son o Ramban hospital where they were given treatment and thus wo precious lives were saved.

Master Muzzafar Ali showed conspicuous courage, presence of mind and promptitude in saving the life of his mother and brother from the accident.

7. Shri Harakabavi Mathada Manjunath,
Door No. 24 3rd Gross Parvathinagar,
Bellary, Karnataka.

On the 1st September, 1986, at about 1.30 P.M., Shri Harakabavi Mathada Manjunath, who was returning home alongwith his cousin on a moped, heard some-one shouting for help from a nearby canal. Shri Manjunath stopped his moped and without any hesitation jumped into the canal. He swam down the canal and held the victim by his tuft. He dragged him to the canal bund, and with the assistance of his cousin lifted him up. The victim was found unconscious and had difficulty in breathing. Shri Manjunath administered first-aid and mouth to mouth resuscitation for about 2 to 3 minutes. After half an hour, the person regained consciousness.

Shri Harakabavi Mathada Manjunath risked his own life for saving the life of a drowning person and thus displayed commendable courage.

8. Shri Ramappa Yamanappa Gowdara,
At & Post Ramathala,
Hungund Taluk,
District Bijapur (Karnataka).

9. Shri Somu Muthu Mani,
At & Post Ramathala,
Hungund Taluk,
District Bijapur (Karnataka).

10. Shri Shivaputhrappa Bhimappa Police,
At & Post Ramathala,
Hungund Taluk,
District Bijapur (Karnataka).

On the 16th December, 1987, 11 women labourers belonging, to Hoovinahalli in Belgaum District were proceeding to their work spot by crossing the Mallaprabha river which had shallow waters. There was an unexpected flash flood in the river which washed away all these women. On seeing this, Shri Ramappa Yamanappa Gowdara, Shri Somu Muthu Mani and Shri Shivaputhrappa Bhimappa Police immediately jumped into the river and saved as many as 7 women. They showed conspicuous courage and promptitude in saving 7 lives from drowning unmindful of the grave risk involved to their own lives.

11. Shri Ramdas Panduranga Ram Pai,
Hulekal-581336, Sirsi Taluk,
District Uttarkannada.

On the 8th March, 1986, Shri Ramadas Panduranga Ram Pai of Hulekal Village who was on his way to the Madhukeshwara Temple at Banavasi on the occasion of Mahashivarathri festival, saw three women bathing on the bank of the Varada river. One of them accidentally slipped and fell into the flooded river. On seeing this, Shri Ramadas Panduranga Ram Pai jumped into the river and caught hold of her. He brought her to the bank and thus saved her life.

Shri Ramdas Panduranga Ram Pai showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a woman from drowning, unmindful of the risk involved to his own life.

12. Shri Dattatrey Ramu Jabade,
Jatrat Village, Chikodi Taluk,
Belgaum District (Karnataka).

On the 3rd October, 1986, Kumar Sandeep aged about 10 years of Jatrat village went to Dudaganga river along with his mother for bathing the buffaloes. While entering into the river he slipped and was being carried away by the fast flowing water. On seeing this, his mother ran to the village crying for help. On hearing her cries, Shri Dattatrey Ramu Jabade, a student of the local college, rushed to help. He jumped into the river and, after swimming against the fast currents of the flowing flood water, he was able to rescue the boy.

Shri Dattatrey Ramu Jabade displayed courage of a high order in saving the life of a boy without caring for his personal safety.

13. Shri Tharanatha Kharvi,
S/o Shri Nagappa Kharvi
Kota Bengare,
Mangalore (Karnataka).

On the 10th December, 1987, a vessel loaded with salt could not enter the back waters at Mangalore due to rough weather and the tindel with six crew came ashore in their life boat to arrange for a launch, but could not get one. When they were returning back to their vessel, their lifeboat capsized and all of them fell into the sea. On seeing this, Shri Tharanatha Kharvi rushed to the spot in his fishing launch alongwith four others and rescued the crew of the vessel. But for the timely courage shown by Shri Tharanatha Kharvi in the midst of heavy rains and cyclone, 6 persons would have lost their lives.

Shri Tharanatha Kharvi showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of six persons from drowning unmindful of the risk involved to his own life

14. Shri Arvind,
S/o Shri Rangachar Joshi,
Qr. No. 9 Taluka Panchayat Samiti,
Near Bus Stand,
Post Gangavathy-583227, Karnataka.

On the 7th June, 1988, at about 6.30 P.M., a 16-year old girl, driven by disappointment at her failure in 9th Standard examination, jumped into a 45 feet deep well with the water level of 10 feet. Shri Arvind, a Home Guard of Gangavathy Unit, happened to see this and immediately rushed to help her. He jumped into the well and, with the help of a rope and other persons who had gathered near the well, brought her out. He gave her artificial respiration and shifted her to the nearest hospital.

Shri Arvind showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a drowning girl unmindful of the risk involved to his own life.

15. Shri Gurupadappa Mallappa Baragi,
Home Guard,
Banahatti Unit,
C/o IHDP Shakha Privadarshini,
Asangi Road, Banahatti-587311,
Jamakhandi Taluk,
District Bijapur (Karnataka).

On the 3rd October 1987, at about 9.30 A.M., a 28 years old woman accidentally fell into a water tank while drawing water. A hue and cry was raised which brought Shri Gurupadappa Mallappa Baragi to the spot. On seeing her plight, he immediately jumped into the tank, which was about 11 feet deep, and saved her from drowning. He, with the help of a rope, brought her out of the tank in an unconscious condition and gave her first aid and revived her through artificial respiration.

Shri Gurupadappa Mallappa Baragi risking his life saved the life of a drowning woman and thus displayed courage and promptitude of a high order.

16. Shri Madhavan Viswanathan,
Chakkolil Padeethattil House,
Pavipad, Pavipad Post Office,
Via Haripad,
District Alleppey (Kerala).

On the 29th June, 1987, at about 7 A.M., Shri Madhavan Viswanathan, while walking through the Pavipadu bridge connecting Pavipadu and Karichal, heard the sound of something falling into the swollen Achankoil river. He immediately jumped into the river from the 25 feet high bridge and caught hold of the woman holding a child in her hand, who had accidentally fallen into the river. He swam across the river for about 10 metres and brought them ashore. He conducted the entire rescue act single handedly unmindful of the risk involved to his own life.

Shri Madhavan Viswanathan displayed conspicuous courage and promptitude in saving two lives.

17. Shri Mohanan Pillai T.K.,
Thapporu Veedu, Poonthala Post Office,
Venmony, Chengannoore,
District Alleppey (Kerala).

18. Shri Ananda Kurup,
Kolesseriyil, Poonthala Post Office,
Venmony, Chengannoore,
District Alleppey (Kerala).

On the 4th August, 1987, at 9.00 A.M., Shri Johnykutty who descended into his house well to clean it collapsed unconscious, fell into the well and died due to some poisonous gas present inside. Rushing to his help two neighbours also died inside the well. Then the rescue operation was conducted by S Shri Thekkethamaramannil Daniel, K. V. Kurup, Mohanan Pillai T. K. and Ananda Kurup. Realising the serious danger caused by the gas inside the well, Shri Mohanan Pillai and Shri Ananda Kurup immediately came out of the well. They lowered a table fan into the well with the help of a rope and started it. Simultaneously they themselves entered into the well. The fan supplied fresh air and diluted the intensity of the poisonous gas. The rescuers continued their onerous task unmindful of the great danger to their own lives and at least managed to take out the 5 victims of the gas tragedy from the well out of which three persons had died. After the rescue act, Shri Mohanan Pillai and Shri Ananda Kurup themselves fell unconscious due to exhaustion and had to be hospitalised together with the other surviving victims.

But for the brave and timely action of Shri Mohanan Pillai T. K. and Shri Ananda Kurup, all the victims would have died in the tragedy.

19. Shri V. C. Joseph,
Valliva Veethil House,
Chennamkary West, Kainakary,
District Alleppey (Kerala).

20. Shri A. D. Joseph,
Aruvan Parambil,
Chennamkary West, Kainakary,
District Alleppey (Kerala).

On the 8th February, 1987, at 11.30 A.M., a country boat carrying 12 persons capsized in the middle of the river. Though hundreds of people witnessed this catastrophe, none came forward to their rescue. At that juncture a boat of the State Water Transport Department luckily came that way. The Driver, Shri A. D. Joseph and Syrang, Shri V. C. Joseph, in their uniform, plunged into the river to rescue the persons who were in imminent danger of being drowned. They lifted the drowning persons one by one into the boat with the help of other members of the crew.

Shri V. C. Joseph and Shri A. D. Joseph showed conspicuous courage and promptitude and saved many lives from drowning at great risk to their own lives.

21. Shri K. K. Purohit,
Sales Tax Officer,
42 Sneh Nagar, Greeland,
Indore-452001 (Madhya Pradesh)

On the 1st November, 1984, Shri K. K. Purohit, while passing through the Moti Colony Indore saw that an enraged mob had set fire to the house of a Sikh family and was looting it. The fire had spread and a number of persons were trapped inside the burning house. About a dozen persons had fallen unconscious and were in danger of death by asphyxiation or burning. Sensing the gravity of the situation, Shri Purohit, unmindful of the great danger to his own life, broke into the burning house and rescued one by one, almost a dozen persons who had fainted in the house due to inhaling of carbon monoxide. He managed to bring the victims out of the burning house and in the fresh air they slowly regained consciousness.

Shri K. K. Purohit showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of many persons trapped inside the burnings house unmindful of the grave risk involved to his own safety.

22. Shri Gurudas Nagesh Babarekar,
At Vithalwadi, Shantinagar,
Post Ulhasnagar, Babarekar Chawl,
Tehsil Ulhasnagar,
District Thane (Maharashtra).

23. Shri Kamalakant Shamsunder Pande,
Shantinagar, Opposite Barrack No. 1201,
Post Ulhasnagar, Camp No. 3, Tehsil Ulhasnagar,
District Thane (Maharashtra).

On the 8th August, 1986, the river and the surrounding areas of Ulhasnagar, Maharashtra, were flooded due to continuous heavy rainfall and some people had taken shelter in a bus stationed on the bridge for repairs. Due to over flood waters the bus suddenly started drifting. Shri Gurudas Nagesh Babarekar and Shri Kamalakant Shamsunder Pande noticed this and realised the great danger to the lives of persons inside the bus. They immediately brought a big rope and tied one end of it to a nearby electric pole. Shri Babarekar caught the other end of the rope, jumped into the water and tied it with the bus. He tried to bring the persons inside the bus to safety with the help of the rope, but due to continuous heavy flow of flood water the task was difficult. Shri Babarekar, therefore, brought one more rope, fixed it to the pole and tried to tie the other end with the bus. In the process he himself started drifting and was also injured. Luckily, he could catch hold of a cement pole. He again caught hold of the rope and was finally able to bring 15 persons on his back to safety. During the course of the entire rescue act, Shri Pande rendered him very valuable assistance.

Shri Gurudas Nagesh Babarekar and Shri Kamalakant Shamsunder Pande displayed courage and promptitude in saving 15 lives at great risk to their own lives.

24. Kumari Swati Harish Amrute,
430-C, Sathe Bungalow,
M.G. Road,
Nasik-422002 (Maharashtra).

On the 23rd July, 1986, Shrimati Ashwini Lale got stuck to an electrified iron bar while hanging a wet towel on it. Hearing her screams, her aged mother-in-law came out, caught her hand to see what had happened to her and in the process she also got stuck to Shrimati Ashwini Lale. Two little sons of Shrimati Ashwini Lale also came running to their mother and grand mother on hearing their screams. Kumari Swati Harish Amrute, who happened to be there, sensing the danger immediately held the two children back. She at once went inside the house and brought a wooden rolling pin and pushed the hands of Shrimati Lale off the electrified iron bar. Both the ladies collapsed on the ground unconscious. Kumari Swati then went inside the house and noticed sparks coming out of the main electric switch. She managed to put it off. She then came out of the house, shouted for help and brought a doctor who treated them.

Kumari Swati Harish Amrute displayed conspicuous courage and promptitude and presence of mind of the highest order in saving two lives.

25. Kumar Ganesh Baburao Acharya,
Patharwadi,
Tehsil & District Latur (Maharashtra).

On the 1st July, 1985, Kumar Ganesh Baburao Acharya and Kumar Borde, Cadets of Maharashtra State N.C.C. were

returning by train from the Punjab N.C.C. National Integration Camp held at Bhakra. As the train left Rajapura Railway Station (Punjab) and picked up speed, Kumar Borde got hurt by the outer signal and fell down from the train. Seeing this Kumar Ganesh Baburao Acharya, without caring for his life, jumped out of the running train and rushed to the spot. Kumar Borde was lying unconscious on the railway track with a serious head injury. As another train was approaching fast, Kumar Ganesh Baburao Acharya immediately removed Kumar Borde from the track and saved him from instant death. Thereafter he took him to the nearby dispensary and got him immediate medical help.

Kumar Ganesh Baburao Acharya displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of the fellow cadet unmindful of the risk involved to his own life.

26. Master Chetan Mohan Kharkundi,
At & Post Arnala, Taluka Vasai,
District Thane (Maharashtra).

27. Shri Bhaichandra Vasudeo Koli,
At & Post Arnala Taluka Vasai,
District Thane (Maharashtra).

28. Shri C. A. Jodhar Khatoo,
At & Post Arnala, Taluka Vasai,
District Thane (Maharashtra).

29. Shri Laxman Shinwar Kharkunde,
At & Post Arnala, Taluka Vasai
District Thane (Maharashtra).

30. Shri Bastyav Francis Dedu,
At & Post Arnala, Taluka Vasai,
District Thane (Maharashtra).

31. Shri Andru Inas Thatu,
At & Post Arnala, Taluka Vasai,
District Thane (Maharashtra).

32. Shri Zuzva Babu Otekar,
At & Post Arnala, Taluka Vasai,
District Thane (Maharashtra)

On the 12th October, 1986, some devotees visited Kalika Deity at Arnala Fort in Thane District, Maharashtra. While returning, they got into a small boat from a larger fishing boat, but the small boat capsized and all the 19 persons fell into the sea, 75 metres away from the shore. Shri Bhaichandra Vasudeo Koli, Shri C. A. Jodhar Khatoo Shri Laxman Shinwar Kharkunde, Shri Bastyav Francis Dedu, Shri Andru Inas Thatu, Shri Zuzva Babu Otekar and Master Chetan Mohan Kharkundi saw this and rushed to their rescue. They swam to the spot of the incident and brought to safety 12 out of 19 persons who were struggling for their lives. Remaining seven persons unfortunately lost their lives. They showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of twelve persons from drowning at grave risk to their own lives.

33. Master Sushil Anand Wable,
Vadagaon Sahani Taluka Junnar,
District Pune (Maharashtra).

On the 13th July 1986, Dinesh Kisan Wable (7 years) and Sandeep Kisan Wable (5 years) were playing near a canal while their mother was working in the field far away. While drinking water Sandeep lost balance and fell into the 4 feet deep canal. While trying to catch hold of Sandeep Dinesh also fell into the canal and both the children were struggling for their lives. Master Sushil Anand Wable who was sitting on the canal bridge at some distance away noticed this and rushed to their rescue. He ran about 300 metres along the canal and jumped into it. He first caught hold of Dinesh and brought him out. Sandeep was in the meanwhile, swept 250 metres away. Master Sushil Wable then immediately swam the distance and brought him also out of water. He, with the help of persons gathered there took both the unconscious boys to Junnar for medical treatment.

But for the conspicuous courage and promptitude shown by Master Sushil Anand Wable, two precious lives would have been lost in the canal waters.

34. Shri Prabhakar Dattatraya Khandke,
C/o Chhaya Photo Studio Patan,
At Post Patan-415206, Taluka Patan,
District Satara (Maharashtra).

35. Shri Shankarrao Bandu Desai,
C/o Traffic Control Room,
S.T. Koyanagar, At Post Koyana,
Taluka Patan,
District Satara (Maharashtra).

On the 21st June, 1984, a bus carrying 50 to 60 passengers was passing over the bridge on Koyana river. It was raining heavily and the river was in spate. The bus while taking a turn fell into the river. Shri Prabhakar Dattatraya Khandke and Shri Shankarrao Bandu Desai who were passing by, saw the bus falling into the river. They immediately jumped into the river and started rescuing the passengers. They rescued all the passengers. 18 passengers were seriously injured and were admitted to the nearest hospitals.

Shri Prabhakar Dattatraya Khandke and Shri Shankarrao Bandu Desai showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of many persons unmindful of the risk involved to their own lives.

36. Shri Eknath Dinkar Gaikar,
Asole Golavali, Taluka Kalyan,
District Thane (Maharashtra).

37. Shri Anna Gopal Khane,
Devaeli, Post Devati, Taluka Kalyan,
District Thane (Maharashtra).

38. Shri Patil Vandar Kundalik,
President Congress (I),
Golavali M.I.D.C, Dombivali,
Taluka Kalyan,
District Thane (Maharashtra).

On the 29th August, 1984, a live wire of very high voltage fell down near Golavali area of the Kalyan Municipal Corporation and six persons were very seriously injured. There was a possibility of many more getting electric shock. Seeing the situation Shri Eknath Dinkar Gaikar, Shri Anna Gopal Khane and Shri Patil Vandar Kundalik rushed to the spot and rescued all the persons with the help of a wooden cot.

Due to the conspicuous courage, presence of mind and promptitude displayed by Shri Eknath Dinkar Gaikar, Shri Anna Gopal Khane and Shri Patil Vandar Kundalik the lives of six persons could be saved from electrocution.

39. Kumari Shanta Baburao Darekar
Post Ghodegaon, Taluka Shigonda,
District Ahmednagar (Maharashtra).

On the 3rd February 1987, Kumari Shanta Baburao Darekar (8 years) was playing with her brothers, Raju (6 years) Viju (4 years) and Satish (11 months) under a tamarind tree. While playing, her three brothers fell into a nearby well. Kumari Shanta immediately jumped into the well even though she did not know swimming and brought them to the steps of the well one by one. She later brought them out of the well.

Kumari Shanta Baburao Darekar showed conspicuous courage and promptitude and saved the lives of her three brothers unmindful of the great risk to her own life.

40. Shri Afazal Patel,
At & Post Aurwad, Taluka Shirol,
District Kolhapur (Maharashtra).

On the 9th July 1987, Shri Annappa Naikwadi who had gone to Krishna river to wash suddenly slipped and fell into the swollen river. The flood water was flowing ten feet above the bridge joining Aurwad and Narsinhawadi where the incident took place. Shri Afazal Patel who was working in the nearby fields saw Shri Naikwadi drowning. He immediately jumped into the river, disregarding his own safety and dragged the hapless victim to the shore, safely on his back.

Shri Afazal Patel showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of Shri Naikwadi at great risk to his own life.

41. Shri Rovuana
Tuinui Darzokai,
Post Office Hnahthial,
Mizoram.

On the 28th April, 1987, at about 1.00 P.M., a boat carrying jeeps and men of Assam Rifles and their families as well as some civilians across the ferry capsized in the middle of Kaladan river and all the passengers were drowning. Some of the victims were frantically trying to catch hold of some gunny bags which had fallen off from the boat, but were floating past in the fast current. A small girl, of about 4 years, was floating past in the middle of the river, barely holding on to a gunny bag. Shri Rovuana, who was playing nearby, saw this and rushed to her rescue.

Shri Rovuana jumped into one of the canoes moored there and headed for the girl. He reached her and caught hold of her by her hand, allowing the canoe to float down unguided. With tremendous efforts he pulled the shocked child into the canoe and was rowing back to the bank of the river. At that moment he noticed a woman drowning near the capsized boat and rushed towards her. Reaching her, he left the paddle and tried to pick up the woman. But he was too frail and the woman too heavy for him to lift her over into the canoe. He caught hold of the woman's hair and kept her face above water, and shouted for help. Soon another boat with three young men reached there and they pulled he woman into the canoe.

Shri Rovuana, by his sheer selfless concern for humanity, will power and complete disregard of the grave danger to his own life, saved the lives of two persons from sure death.

42. Shri Vanngura,
Tuipui, Darzokai,
Post Office Hnahthial,
Mizoram.

On the 28th April, 1987, at about 1.00 P.M., Shri Vanngura was sitting on the shore at Tuipui ferry on Kaladan river. Suddenly he heard a commotion and, looking at the river, found that a boat was capsizing in the middle of the river. He saw all the passengers falling into the river. Two persons, while falling overboard, caught hold of a steel wire rope which was strung across the river for use by a captive ferry. These two persons were being pulled by the fast current and were barely able to hold on to the wire for their lives. Shri Vanngura immediately took a country boat and rowed against the fast current, reached the spot and rescued both the struggling men.

The lives of two men were saved only due to Shri Vanngura's courageous act in the face of danger to his own life.

43. Kumari Lalnunpuii,
At & Post Kolosib,
Mizoram.

On the 23rd December, 1987, at about 1.00 A.M., a truck met with an accident near Rawpui village, Lunglei District and rolled down a steep slone several metres below the road. There were 23 persons, including the driver and the handyman, in the truck. Six of them died on the spot and all the remaining seventeen persons sustained injuries.

One of the injured persons, 17 years old Kumari Lalnunpuii, climbed up to the road with great difficulty and, in the dead of night and inspite of the injuries and shock, walked alone to the nearest village, Rawpui, 4 Kms away, to seek help. The villagers of Rawpui immediately rushed to the place of the accident and launched rescue operation. They promptly sent all the injured persons to the nearest hospital and also the six dead bodies to their respective places of residence.

Kumari Lalnunpuii showed conspicuous courage and promptitude, and helped to save many lives.

44. Kumari Jyotsnamayee Behera,
D/o Shri Subal Behera,
Village Nua Sahi,
At & Post Office Athamallik,
Police Station Athamallik,
District Dhenkanal (Orissa).

On the 11th July, 1986, at about 10.00 A.M., while Kumari Jyotsnamayee Behera was passing on the ridge of a tank widely known as 'Police Bundha' on her way to school, she saw two girls drowning in the tank. She immediately jumped into the tank and swam upto them. She relentlessly pushed the struggling girls towards the shallow part of the tank where their feet touched the ground, and was thus able to save their lives.

Kumari Jyotsnamayee Behera saved two lives by showing exemplary courage and promptitude unmindful of the grave risk involved to her own life.

45. Shri Danei Pradhan,
Village Tihidi,
Police Station Tihidi,
District Balasore (Orissa).

On the 14th June, 1986, at about 11.00 A.M., two boys accidentally fell into a village tank while taking bath. As they did not know swimming they were struggling for their lives. Shri Danei Pradhan, a labourer working nearby noticed this. He rushed to the tank and jumped into it. He lifted both the boys and swam back to the shore.

Shri Danei Pradhan showed conspicuous courage and promptitude in saving two lives unmindful of the grave risk involved to his own life.

46. Master Ankur Khurana,
S/o Major A. K. Khurana,
19 Mechanise Battalion,
C/o 56 APO.

On the 18th January, 1987, at about 11.00 A.M., four children named Master Shantanu Oberoi (10 years), Master Oberoi (8 years), Master Ankur Khurana (9 years) and Kumari Aastha Khurana (6 years) were playing near a 20—25 feet deep lake, situated at Sadhuwal Military Area. None of these children knew swimming. Kumari Aastha Khurana suddenly slipped and fell into the tank and started drowning. On seeing this, Master Saurabh Oberoi jumped into the tank to save her, but he himself started drowning. Seeing them drowning, Master Ankur Khurana, elder brother of Kumari Aastha Khurana, also jumped into the tank. He was able to bring both of them to the shore, but could not bring them out as the shore was high and slippery. As Ankur Khurana was struggling, Master Shantanu was on the bank of the tank shouting for help, gave him support with the help of a branch of a tree. A sentry passing by heard the shouts, ran to the spot and brought the three children out, but by that time Kumari Aastha Khurana and Master Saurabh Oberoi were dead.

Master Ankur Khurana showed exemplary courage and promptitude in his effort to save two lives.

47. Shri Raghuvir Singh,
S/o Shri Padam Singh,
Resident of Gher Naswarian,
Ganga Mandir,
Bharatpur (Rajasthan).

In 1957, Shri Raghuvir Singh had saved the lives of two girls from drowning in the Sujan Ganga Canal.

On the 13th July, 1982, a gas cylinder caught fire in the house of one Shri Babulal Mathur and the fire was spreading. Shri Raghuvir Singh, without caring for his own life climbed on top of the roof and jumped into the house. He caught hold of the burning cylinder, wrapped it in cloths and brought it out of the house to an open ground. He extinguished the fire by throwing sand and dust on it and thus averted a disaster.

On the 14th January, 1986, Shri Raghuvir Singh had saved a five-year old child from drowning in a well, by jumping into the well, in utter disregard of his own life.

Shri Raghuvir Singh displayed conspicuous courage and promptitude in saving lives on three occasions unmindful of the risk involved to his own life.

48. Shri Gautam Kumar Sanadhya,
S/o Shri Radha Krishna Sanadhya,
Ward No. 15, Reti Mohalla,
Kankroli,
District Udaipur (Rajasthan).

On the 22nd May, 1987, a pilgrim from Ahmedabad to Kankroli Mandir was taking bath in a nearby tank. Due to heavy current of water, he fell into it and was drowning. People nearby shouted for help. Shri Gautam Kumar Sanadhya, who happened to be there, immediately jumped into the tank and rescued him.

On the 21st June, 1987 Shri Sanadhya jumped into a tank to save a drowning person, but he could recover only his dead body.

On the 9th August, 1987, three boys were boating in the ank and their boat was trapped in thorny bushes. Seeing his, Shri Sandhya jumped into the tank, swam about 300 ietres and brought the boat to safety. Thus he saved three ves.

Shri Gautam Kumar Sandhya showed conspicuous courage nd promptitude on three occasions in coming to the rescue of persons whose lives were in danger unmindful of the rave risk involved to his own safety.

49. Shri P. S. Hameed,
Boat Lascar,
Port Department, Amini,
Lakshadweep.

On the 14th July, 1984, a pable boat of the Port Department of Lakshadweep Administration, while entering the agoon at Kavaratti after taking 25 passengers from ship, drifted at the open see and capsized due to tumultuous waves The lives of all the persons on board were in peril. An Administration boat 'Kamini' rushed to their rescue. Shri '. S. Hameed, Lascar of 'Kamini', alongwith other crew nembers made an all-out efforts to save the lives of the nelpless victims, unmindful of the risk involved to his own ife. Lives of all passengers except one could be saved due o timely action taken by Shri P. S Hameed and other rew members of 'Kamini'

Shri .P S. Hameed displayed conspicuous courage and promptitude in saving several lives.

50. 4454285 Lance Naik Devi Dayal,
14 Sikh Light Infantry,
C/o 56 APO.

51. 4455987 Sepoy Bhinder Singh,
14 Sikh Light Infantry,
C/o 56 APO.

52. 4459586 Sepoy Dalbar Singh,
14, Sikh Light Infantry,
C/o 56 APO.

53. 4463145 Sepoy Amrik Singh,
14, Sikh Light Infantry,
C/o 56 APO.

54. 4454749 Sepoy Lakhvir Singh,
14, Sikh Light Infantry,
C/o 56 APO.

55. 4462092 Lance Naik Parsat Singh,
14 Sikh Light Infantry,
C/o 56 APO.

56. 4462400 Sepoy Gurmel Singh,
14, Sikh Light Infantry,
C/o 56 APO.

57. 4464042 Sepoy Lakhbir Singh,
14, Sikh Light Infantry,
C/o 56 APO.

On the 9th July 1987, at about 4.30 A.M., some front bogies of the Delhi-bound Dakshin Express derailed and overturned due to raging flash floods. The above mentioned jawans of the 14 Sikh Light Infantry who were travelling in the train immediately swung into rescue operation.

They waded through the heavy downpour in waist deep swiyt water and climbed over the derailed compartment. They with the help of other jawans, succeeded in rescuing about 70 passengers from drowning.

At about 5 A.M., when visibility improved due to daybreak and reduced rainfall, they spotted another two compartments of the train washed approximately 150 feet away, nearly submerged in the flood waters. They climbed on the overturned compartment and found that a frail girl was holding on to a window rail. After breaking open a window, some jawans dived into the murky waters and rescued the girl. The group later brought out twenty four dead bodies from this beleaguered compartment.

At about 5.30 A.M., they saw a woman suddenly jumping into the swirling torrential flood waters in a desperate bid to save her drowning child. Within seconds she was engulfed in the fast current and was being swept away. One of the jawans moved with alacrity, wading into the murky waters and tried to catch hold of the woman, but he slipped in the slush and twisted his left ankle and injured his right knee. Undeterred by the injury, he got up and duly assisted by two jawans, succeeded in rescuing the drowning woman.

These jawans of Sikh Light Infantry showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of victims of the train derailment unmindful of the risk involved to their own lives.

58. 4549603 Lance Naik Sharma Mohan Lal Giga Bhai,
11, Mahar,
C/o 56 APO.

On the midnight of 1st February, 1987, a devastating fire broke out in the Public Works Department store shed, where Army and Public Works Department personnel were sleping, and an alarm was raised.

Lance Naik Sharma Mohan Lal Giga Bhai, a driver of Infantry Regiment who was sleeping in his vehicle, woke up and rushed to the site. The fire was raging and spreading fast due to a strong breeze. He sensed the urgency and *valiantly dashed in. On finding the door bolted from inside* he kicked it open and was immediately confronted with a wall of flames. He looked through the smoke and found a Public Works Department chowkidar lying inside with his clothes burning. Unmindful of the grave risk to his life, he charged into the room, picked up the chowkidar and brought him out. In the process, his own clothes caught fire. Other jawans who had gathered outside by then took hold of them and rolled them in blankets.

Lance Naik Sharma Mohan Lal Giga Bhai displayed exemplary courage and promptitude in saving the life of a person.

59. 4178257 Sepoy Bikram Chand,
16 Kumaon,
C/o 56 APO.

60. 4174257 Naik Havat Singh,
16 Kumaon
C/o 56 APO.

On the 17th April, 1987, at 10.45 A.M., Shrimati Sukhi Devi who had gone to the Bikaner Gang Canal for a wash slipped and fell into it. She started drowning, and with the force of the current, was being swept away. The canal was 15 feet deep, had a current of 2.5 knots and was bricklined with steep banks. Her 10 year old daughter started screaming for help frantically. On hearing her creams, sepoy Bikram Chand, who was maintaining his Bunker about 100 metres downstream, noticed the fingers of the drowning woman protruding out of water. With total disregard for personal safety, he promptly jumped into the canal and tried to drag her to the bank. Since Sepoy Bikram Chand was not a proficient swimmer, the woman pulled him underwater and a frantic struggle ensued almost drowning the gallant sepoy. Inspite of such heavy odds, Sepoy Bikram Chand kept trying and did not abandon his efforts In the meantime Naik Havat Singh, his Section Commander who is a proficient swimmer, also dived into the canal and reached the woman, but was caught in a tight grip by her and pulled under water. However, he managed to free himself from the grip, but he lost grip on the woman. Soon a portion of her dress emerged at water-level and he immediately caught hold of her. He managed to bring the unconscious woman out of water. Both the jawans administered first-aid and revived her.

Sepoy Bikram Chand and Naik Havat Singh showed exemplary courage and promptitude in saving the life of the drowning woman without caring for their own lives.

61. 9083489 Naik Gullu Ram,
11 JAK LI,
C/56 APO.

62. 9081002 Lance Havildar Subash Chander,
11 JAK LI
C/56 APO.

On the 7th August 1986, at about 2.00 P.M., a civil vehicle fell into river Bhagirathi, approximately 300 metres away from a small detachment camp of 11 JAK LI. On noticing this, the day sentry of the camp raised an alarm which drew Naik Gullu Ram, Lance Havildar Subash Chander and other jawans to the site of the accident.

They noticed that some victims were desperately trying to swim in the swolen river. The vehicle was not visible as the water was extremely muddy. Naik Gullu Ram and Lance Havildar Subash Chander tied one end of the rope to the telephone pole and the other to their bodies and jumped into the river. They swam towards the fallen vehicle and started searching for the passengers who were trapped inside the submerged vehicle. They, against heavy odds, finally succeeded in pulling five persons out of their watery grave and thus saving their lives.

Naik Gullu Ram and Lance Havildar Subash Chander displayed exemplary courage, promptitude and bravery of high order in saving the lives of five drowning persons unmindful of the risk involved to their own lives.

63. 3372541 Havildar Maier Singh,
7 Sikh,
C/o 56 APO.

64. 3378921 Sepoy Surinder Singh,
7 Sikh,
C/o 56 APO.

65. 1393588 Lance Naik/Capenter Brij Bhushan Sharma,
7 Sikh,
C/o 56 APO.

On the 4th February 1987, at about 3.30 P.M., a tractor loaded with house-hold items, with three civilians on, met with an accident while crossing the bridge on Khalra-Harika and fell into a drain which was approximately 15 feet deep with more than 8 feet water.

Havildar Maier Singh who was working nearby heard a loud thud and rushed towards the bridge shouting for help. His other two companions, Sepoy Surinder Singh and Lance Naik/Carpenter Brij Bhushan Sharma also rushed to the bridge on hearing his shouts. They immediately jumped into the ice cold water and rescued the victims. They then gave first aid to the unconspicuous victims and took them immediately to Advance Dressing Station 307 Field Ambulance. By their timely and courageous action the brave lawans saved the lives of two persons. The third victim unfortunately died.

Havildar Majer Singh, Sepoy Surinder Singh and Lance Naik/Carpenter Brij Bhushan Sharma displayed conspicuous courage, presence of mind and promptitude in having the lives of two persons unmindful of the grave risk to their own lives.

66. JC-112415 Subedar Shobh Nath,
14 Rajput,
C/ 56 APO.

On the 12th October 1985, while Lance Naik Bharat Ram and Sepoy Kanhaiya Pandey were doing watermanship training in Betwa canal, their boat toppled over. Subedar Shobh Nath who happened to be there came to their rescue and saved their lives from drowning.

On the 24th July 1986, a new Sepoy Sudhakar Sharma fumbled with a grenade, took out the safety pin and dropped the grenade in the throwing bay itself. Subedar Shobh Nath who was in the next throwing bay immediately realised the danger and moved to the throwing bay. He picked up the grenade and rolled it out of the bay. The grenade exploded immediately.

Subedar Shobh Nath showed conspicuous courage and promptitude in saving the two lives from drowning and in preventing the explosion of a grenade dropped accidentally in a throwing bay.

67. Shri Ram Avtar, (Posthumous)
16/4-06, Ram Chanderpuri,
Near Meda Mill Phatak,
Saharanpur (U.P.).

On the 23rd April 1987 one tank truck carrying petrol 2nd diesel from BPC Depot, Saharanpur, after crossing the G.T. Road and while entering into the Railways Goods shed road, Saharanpur, splashed petrol due to jerk from the rear compartment, near the open bhatties of a roadside dhaba and a fire broke out. 16 people sitting in the dhaba and in its vicinity were engulfed in fire.

Shri Ram Avtar, Senior Khallasi of Indian Oil Corporation Ltd., Saharanpur, who happened to be there at that time, rushed to help to extinguish the fire and saved the lives of the hapless victims. In the process, he got 100% burn and succumbed to burn injuries on the 24th April, 1987. other fire victims also lost their lives in the incident.

Shri Ram Avtar displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of many persons engulfed in fire, but unfortunately lost his own life in the process.

68. G-91509 Overseer Harbhajan Singh,
394 Road Maintenance Platoon (Project Deepak),
C/o 56 APO.

Manali-Sarchu road at a height of 16,047 feet, had become a death trap for more than 800 casual labourers of Project Himank, who had left Leh by road for Chandigarh on the 17th October, 1987 via Manali, as road link between Leh and Srinagar was closed due to avalanches. On the 18th October 1987, at about 1900 hours, when a convoy of 3 buses belonging to Himachal Pradesh Transport Corporation and GREF vehicles reached there, it was snowing heavily. Poor visibility and heavy snowing made it impossible for buses to move forward. Continuous snow fall on the 20th October, 1987, made the position further critical for the stranded buses and men. On the 21st October 1987, some of the stranded persons could move only on foot, and were affected by continuous walk in snow as they were not equipped properly. It was need of the hour to rescue the men by all possible means.

G/91509 Overseer Harbhajan Singh of 394 RMPL (11 RCC) under 38 BRTE accepted the challenge and organised the rescue operation without caring for climatic hazards and grave risk to his life. He walked up and down to supervise personally evacuation of stranded labourers. He was having only 30 CP Labourers with him to assist him in the operation. Against all odds, he continued to supervise road clearance work and carried the sick persons on his shoulder to the camp at lower heights. Shri Harbhajan Singh could save the lives of at least 20 persons who otherwise would have been badly affected due to snow bite which might have required amputation of their legs or even loss of their lives.

Shri Harbhajan Singh displayed conspicuous courage determination, exceptional concern for human life and promptitude in saving the lives of many stranded persons unmindful of the risk involved to his own life.

69. Shri Kishan Gopal Dave, (Posthumous)
Near Gopal Bhawan
Kalorion Ka Bas,
Inside Nagorigate,
Jodhpur (Rajasthan).

On the 23rd April, 1988, at 10.30 A.M., while Shrimati Kamla was cooking in the kitchen the delivery man came to deliver a gas cylinder. As he removed the cap from the valve, gas started leaking fast. He at once advised the members of the family to go out. But as the gas was spreading very fast, the house caught fire and many persons were engulfed in the fire.

On hearing the screams of the victims Shri Kishan Gopal Dave and his younger brother Shri Om Parkash alongwith some other persons of the neighbourhood rushed to the spot to rescue the trapped persons. They successfully brought one girl out of the burning house. Another girl had already died of severe burns. Shri Kishan Gopal Dave in complete disregard of his personal safety, caught hold the burning cylinder and threw it out. But in this process he sustained serious burn injuries to which he succumbed after a week in the hospital.

Shri Kishan Gopal Dave exhibited exemplary courage and promptitude in saving the lives and property of his neighbour at the cost of his own life.

S. NILAKANTAN
Director

MINISTRY OF FINANCE

(DEPARTMENT OF ECONOMIC AFFAIRS)

New Delhi, the 24th February 1989

No. F. 16(19)-PD/87.—Government of India hereby makes the following amendment in the Special Deposit Scheme for non-Government provident, superannuation and gratuity funds announced in the Ministry of Finance (Department of Economic Affairs) Notification No. F. 16(1)-D/75, dated the 30th June, 1975 as extended by its Notification No. F. 16(8)-PD/84 dated 12th June, 1985.

2. Under paragraph 6, the following note shall be inserted :—

"Note : Payment of interest on half yearly basis made applicable for the year 1988 vide Notification No. 16 (19)-PD/87 dated 10th March, 1988 is extended for the year 1989 also. The interest shall be payable on 1st July, 1989 and 1st January, 1990".

V. BALASUBRAMANIAN,
Officer of Spl. Duty (Bud).

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

(DEPARTMENT OF CULTURE)

New Delhi, the 20th February 1989

RESOLUTION

No. F. 23-53/83-CH.5.—In partial modification of this Department Resolution of even number dated the 21st April, 1987, reconstituting the Central Advisory Board of Museum and its Standing Committee, the following additions are further made in the composition of the Board and its Standing Committee from the date of publication of this Resolution :—

(i) following person under the Government of India is inducted as Ex-Officio Memer below part 8 of the Composition thereof :—

15. Prof. Suresh Dalal, Member, University Grants Commission, Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi.

(ii) the following persons are also inducted in the Composition of Standing Committee of the Board and their respective names shall be added at S. No. 11 to 13 under para 7 of the Resolution dated the 21st April, 1987 namely :—

11. Director General, Archaeological Survey of India, Janpath, New Delhi.

12. Director, National Research Laboratory for Conservation of Cultural Property, E/3 Aliganj Scheme, Lucknow.

13. Prof. Suresh Dalal, Member, University Grants Commission, Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi.

ORDER

1. Ordered that a copy of this Resolution may be communicated to all concerned.

2. Ordered also that Resolution be published in the Gazette of India for general information.

R. C. TRIPATHI, Jt. Secy.

New Delhi, the 28th February 1989

RESOLUTION

No. F.8-50/88-CH.1.—With a view to reviewing the programmes of research, surveys and other activities of the Anthropological Survey of India from time to time and making recommendations to Government, an Advisory Committee was constituted vide the Ministry of Education and Youth Services Resolution No. F. 4-5/69-S.III dated the 1st September, 1969 and was re-constituted vide Department of Culture Resolution No. F. 8-54/85-CH.1 dated 26th July, 1985, the President is hereby pleased to reconstitute the Advisory Committee for the Anthropological Survey of India with the following composition and terms of reference :—

(a) *Composition* :

Chairman

1. Secretary,
Department of Culture
New Delhi.

Vice-Chairman

2. Dr. I. P. Singh,
Department of Anthropology,
University of Delhi
Delhi-110007.

Members

3. Prof. Raghbir Singh
Department of Anthropology,
University of Delhi
Delhi.

4. Prof. V. Bhalla
Department of Anthropology,
Panjab University,
Chandigarh-160014.

5. Dr. A. C. Bhagwati
Professor of Anthropology,
Gauhati University
Guwahati-781014.

6. Dr. R. K. Bhowmick,
Professor of Anthropology,
Calcutta University,
Calcutta.

7. Dr. K. C. Tripathy,
Department of Anthropolgy,
Utkal University,
Vani Vihar,
Bhubaneshwar-751004.

8. Dr. K. Thimma Reddy,
Dean School of History, Culture and Archaeology, Telugu University,
Srisailam Campus,
Srisailam-518101.

9. Dr. Sachidananda,
Professor of Anthropology,
A. N. Sinha Institute
Patna.

10. Dr. B. Pakem,
Head of the Deptt. of Political, Science, North Eastern Hill University,
Mayurbhanj Complex,
Shillong-793003.

11. Dr. Francis Ekka,
Deputy Director,
Central Institute of India Languages,
Mysore-570006.

12. Dr. N. N. Vyas,
Director,
Tribal Research Institute,
Ashoknagar,
Udaipur.

13. Dr. D. V. Raghavarao,
Director,
Tribal Research Institute,
Tamil University,
Udhagamandalam-643004.

14. Dr. P. K. Shrivastava,
Professor and Head of the Deptt. of Anthropology,
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya
Sagar-470003.

15. Prof. A. R. Momin,
Reader in Cultural Anthropology,
Department of Sociology,
Bombay University Campus
Kalina,
Bombay-400098.

16. Director-General,
Archaeological Survey of India,
Janpath,
New Delhi.

17. Registrar-General,
Census of India,
New Delhi.

18. Dr. Shyam Singh Shashi,
Director, Publication Division,
Ministry of Information & Broadcasting,
Patila House, New Delhi.

19 Representative of the Planning
Commission, Yojna Bhawan
New Delhi.

20. Director-General,
Anthropological Survey of India,
New Delhi.

Member-Secretary

21. Director,
Anthropological Survey of India,
Calcutta.

(b) *Terms of Reference* :

(i) To review the programmes of research, surveys and other activities of the Anthropological Survey of India from time to time and to make recommendations to the Government upon them;

(ii) to recommend specific measure for collaboration between the Anthropological Survey of India and University Departments of Social Sciences with particular reference, to cooperative research projects, exchange of personnel, special studies, seminars, symposia and publications; and

(iii) to advise on all other matters that might be specifically referred to it by the Government.

The term of office of members of the Advisory Committee shall be three years from the date of issue of the Resolution. The Government may, however, terminate the membership of any member before the completion of the tenure of three years without assigning any reason or may reconstitute the Advisory Committee in its entirety.

The Committee shall meet as often as necessary but atleast once a year.

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all the members of the Advisory Committee for the Anthropological Survey of India.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

N. SIKDAR, Dy. Educational Adviser.

MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING

New Delhi, the 28th February 1989

RESOLUTION

No. 15/12/88-IP&MC.—It has been decided to constitute a Committee to review the performance of the Indian Institute of Mass Communication, New Delhi which was set up as a centre for training, research and development of the media of mass communication in the country. The Committee would consist of the following members :

Chairman

1. Prof. M. N. Srinivas,
78A, Benson Cross Road,
Bangalore-560042.

Members

2. Shri U. C. Tiwari,
49, Mandakini Enclave,
New Delhi-19.

3. Shri Ramu Patel,
Editor,
Western Times,
Gujarat Samachar Bhavan,
Khanpur,
Ahmedabad-380001.

4. Shri M. J. Akbar,
Editor,
The Telegraph,
689 Prafulla Sarkar Street,
Calcutta-700001.

5. Shri K. S. Karnik,
Director,
Development and Educational
Communication Unit,
S A C PO, Ahmedabad.

6. Shri I. Ramamohan Rao,
PIO, PIB, Shastri Bhavan,
New Delhi.

7. Shri K. S. Baidwan,
Joint Secretary,
Ministry of I&B
Member-Secretary

8. Dr. J. S. Yadava,
Director,
Indian Institute of Mass Communicatic
Shaheed Jit Singh Marg,
JNU Campus,
New Delhi.

2. The terms of reference of the Committee will be : —

(i) To make a general assessment of the performanc of the Institute since the last review done in 197 73;

(ii) To examine the extent to which the Institute h contributed towards the fulfilment of the objects c the IIMC Society as enunciated in its Memorandu of Association;

(iii) To assess whether the expenditure incurred durin the period in question was commensurate with th results achieved;

(iv) To identify areas of training, teaching and researc to which the Institute should devote special attentio in the coming years in order to ensure that it i able to meet the growing and changing requirement of Media, Media men, Media Users and Medi Practioners. For this purpose the Committee ma also suggest modification of the existing course and introduction of new courses as may be con sidered appropriate.

3. The Committee will devise its own procedure of work and submit its report within a period of 6 months. The headquarters of the Committee will be at New Delhi.

4. The expenditure on TA/DA in connection with the meetings of the Review Committee will be borne by the Department/Office to which the official Members belong. The non-official Chairman/Members will be entitled to travelling and daily allowance in accordance with the Ministry of Finance (Department of Expenditure) O.M. No. 6/26/E.IV/59 dated 5th September, 1980 as amended from time to time.

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to the Chairman/Members of the Committee, all Ministries and Departments of the Government of India, AGCR/DACR, New Delhi.

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

K. S. BAIDWAN, Jt. Secy.

MINISTRY OF INDUSTRY

DEPARTMENT OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT

OFFICE OF THE DEVELOPMENT COMMISSIONER (SMALL SCALE INDUSTRIES)

New Delhi, the 14th March 1989

RESOLUTION

No. 1(1)/89-SSI Bd.—Government of India are pleased to re-constitute the Small Scale Industries Board as follows:—

CHAIRMAN

1. Minister of Industry,
Government of India,
Udyog Bhavan,
New Delhi.

MEMBERS

2. Minister of Commerce,
Government of India,
Udyog Bhavan,
New Delhi.

3. Minister of Steel & Mines,
Government of India,
Udyog Bhavan,
New Delhi.

4. Minister of State in the Department of Industrial Development in the Ministry of Industry,
Udyog Bhavan,
New Delhi.

5. Minister of State for Petroleum & Natural Gas,
Government of India,
Shastri Bhavan,
New Delhi.

6. Minister of State in the Deptt. of Rural Development in the Ministry of Agriculture,
Government of India,
Krishi Bhavan,
New Delhi.

7. Minister of State (Revenue),
Finance Ministry,
Government of India,
North Block,
New Delhi.

8. Shri Biren Singh Engti,
Minister of State in the Ministry of Planning and Minister of State in the Ministry of Programme Implementation,
Government of India,
Sardar Patel Bhavan,
New Delhi-110001.

9. Minister of State for Food Processing Industries,
Government of India,
Transport Bhavan,
Parliament Street,
New Delhi-110001.

10. Minister of State in the Departments of Youth Affairs and Sports and Women & Child Development in the Ministry of Human Resource Development,
Government of India,
New Delhi.

11. Member (Industry)
Planning Commission,
Parliament Street,
New Delhi.

12. Secretary,
Department of Industrial Development,
Ministry of Industry,
Government of India,
Udyog Bhavan,
New Delhi.

13. Secretary,
Ministry of Commerce,
Government of India,
Udyog Bhavan,
New Delhi.

14. Secretary (Steel),
Ministry of Steel & Mines,
Government of India,
Udyog Bhavan,
New Delhi.

15. Secretary (Banking),
Ministry of Finance,
Government of India,
North Block,
New Delhi.

16. Secretary,
Ministry of Food Processing Industry,
Transport Bhavan,
Parliament Street,
New Delhi.

17. Secretary (Women & Child Development),
Ministry of Human Resource Development,
Government of India,
Shastri Bhavan,
New Delhi.

18. Minister incharge of Small Scale Industries,
Government of Andhra Pradesh,
Hyderabad.

19. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Arunachal Pradesh,
Itanagar.

20. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Assam,
Dispur.

21. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Bihar,
Patna.

22. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Gujarat,
Ahmedabad.

23. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Goa,
Panaji.

24. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Haryana,
Chandigarh.

25. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Himachal Pradesh,
Shimla.

26. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Jammu & Kashmir,
Srinagar.

27. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Karnataka,
Bangalore.

28. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Kerala,
Trivandrum.

29. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Madhya Pradesh,
Bhopal.

30. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Maharashtra,
Bombay.

31. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Manipur,
Imphal.

32. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Meghalaya,
Shillong.

33. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Mizoram,
Aiswal.

34. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Nagaland,
Kohima.

35. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Orissa,
Bhubaneshwar.

36. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Punjab,
Chandigarh.

37. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Rajasthan,
Jaipur.

38. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Sikkim,
Gangtok.

39. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Tamil Nadu,
Madras.

40. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Tripura,
Agartala.

41. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Govt. of Uttar Pradesh,
Lucknow.

42. Minister Incharge of Small Scale Intustries,
Government of West Bengal,
Calcutta.

43. Lt. Governor,
Andaman & Nicobar Islands,
Port Blair.

44. Lt. Governor,
Daman & Diu.

45. Chief Commissioner,
Chandigarh Administration,
Chandigarh.

46. Administrator,
Dadra & Nagar Haveli,
Silvassa.

47. Administrator,
Lakshadweep,
Kavaratti, H.P.O
Calicut.

48. Chief Executive Counc.....
Delhi Administration,
Delhi.

49. Minister Incharge of Small Scale Industries,
Government of Pondicherry,
Pondicherry.

50. Governor,
Reserve Bank of India,
5, Carumichel Road,
Bombay-400 026.

51. Chairman,
Industrial Development Bank of India,
227 Vinay K. Shah Marg, Nariman Point,
Bombay.

52. Chairman,
State Bank of India,
Central Office, New Administrative Building,
Madame Came Road,
Bombay-400 021.

53. Chairman,
Industrial Finance Corporation of India,
Bank of Baroda Building,
16 Sansad Marg,
New Delhi-110 001.

54. Chairman,
National Bank for Agriculture & Rural Development,
Peonam Chamber Shivsagar Estate,
Dr. Annie Besant Road,
Bombay-400 018.

55. Chairman,
National Small Industries Corporation Ltd.,
Okhla Industrial Estate,
New Delhi.

56. Chairman,
State Trading Corporation of India Ltd.,
Chandralok Building, 36 Janpath,
New Delhi-110 001.

57. Chairman,
Minerals & Metals Trading Corporation of India Ltd.,
The Express Building,
Bahadur Shah Zafar Marg,
New Delhi-110 002.

58. Chairman,
Steel Authority of India Ltd.,
Ispat Bhavan,
C.G.O. Complex, Lodhi Road,
New Delhi-110003.

59. Chairman,
Indian Petro-Chemicals Corporation Ltd.,
P.O. Petro-Chemicals,
Vadodra (Gujarat).

60. Chairman,
Khadi & Village Industries Commission Gramodaya,
3-Irla Road, Vile Parle (West),
Bombay-400 056.

61. Development Commissioner, Handicrafts,
West Block-VII, R.K. Puram,
New Delhi-110021.

62. Development Commissioner for Handlooms,
Ministry of Commerce, Deptt. of Textiles,
Udyog Bhavan,
New Delhi.

63. Chairman,
Council of Small Industries Corporation in India,
Flat No. 910, Padma Tower, Rajendra Place,
New Delhi.

64. Chairman,
Tamil Nadu Corporation for Development of
Women Ltd.,
116, Dr. Radhakrishnan Salai, Mylapore,
Madras-600 004.

65. President,
Federation of Associations of Small
Industries of India (FASII),
23-B/2, Guru Govind Singh Road,
New Delhi-110 005.

66. President,
Indian Council of Small Industries,
1A, S.N. Banerjee Road,
Calcutta-700 013.

67. President,
National Alliance of Young Entrepreneurs,
301-302, Saraswati Bhavan,
37, Nehru Place,
New Delhi.

68. President,
Federation of Indian Chamber of Commerce &
Industry,
Tansen Marg,
New Delhi.

69. President,
All India Manufacturers Organisation,
Jeewan Sahkar, Sir P.M. Road,
Bombay.

70. The Secretary,
Federation of Engineering Industries of India,
B-30, Sagar Apartments,
6, Tilak Marg,
New Delhi-110001.

71. President,
Indian Council of Women Entrepreneurs (ICWE),
A-7/2, New Friends Colony,
New Delhi.

72. Co-Chairperson,
Women's Wing of NAYE,
301-302, Sarswati Bhavan,
37, Nehru Place,
New Delhi.

73. Mrs. Alka Agarwal,
President,
Women Wing of ICSI,
38/1F, Manicktala Main Road,
Calcutta-700 054.

74. Shri Santosh Kumar Bargodia,
Member of Parliament (Rajya Sabha),
E-12, Greater Kailash-II,
New Delhi-110048.
65, Bhagat Batika,
Civil Lines,
Jaipur (Rajasthan).

75. Shri Basudev Mohapatra,
Member of Parliament (Rajya Sabha),
138, South Avenue,
New Delhi-110 011.

76. Shri Nand Lal Choudhary,
Member of Parliament (Lok Sabha),
92, South Avenue,
New Delhi-110011,
251, Bhagwan Ganj,
Sagar (M.P.).

77. Shri Shripati Misra,
Member of Parliament (Lok Sabha),
12, Teen Murti Lane,
New Delhi-110 011.

78. President,
Andhra Pradesh Small Scale Industries Association,
Industrial Estate,
Vijayawada (AP).

79. President,
Guwahati Industrial Estate Association,
Industrial Estate,
Guwahati-781 021 (Assam).

80. President,
Bihar Small Scale Industries Association,
204, Nelgiri Bhavan, Boring Canal Road,
Patna (Bihar).

81. President,
Okhla Industries Association,
Okhla Industrial Estate,
New Delhi-110 020.

82. President,
Gujarat State Small Scale Industries Federation,
Gun House, Khanpur,
Ahmedabad.

83. President,
Federation of Industries Association,
C-1/615, GIDC Estate, Distt. Surendernagar,
Wadhwan City (Gujarat).

84. President,
Faridabad Small Industries Association,
291, Sector 24,
Faridabad-121005 (Haryana).

85. President,
Himachal Pradesh Small Scale Industries Association,
Solan.

86. President,
J & K Small Scale Industries Association,
Srinagar.

87. President,
Karnataka Small Scale Industries Association,
2/106, 13th Cross, Magadi Road Chord Road,
Vijayanagar,
Bangalore-560 040.

88. President,
Kerala State Small Industries Association,
Uthara Building, Karakkat Road,
Cochin-682 016.

89. President,
Association of Industries Madhya Pradesh,
Industrial Estate Pologround,
Indore-452 003.

90. President,
Maharashtra Small Scale Industries Association,
Bombay.

91. President,
Orissa Small Scale Industries Association,
Industrial Estate,
Cuttack-753 010.

92. President,
The Federation of Punjab Small Industries Association,
Punjab Trade Centre Complex,
Near State Bank of India, Mifler Ganj,
Ludhiana-141 003.

93. President,
Federation of Association of Small Industries of Rajasthan,
Rajasthan Chamber of Commerce Bhavan,
M.I. Road,
Jaipur-302 001.

94. President,
Tamil Nadu Small Scale Industries Association
10, G.S.T. Road, Guindy,
Madras-600 032.

95. President,
Federation of Associations,
Cottage & Small Industries,
Agartala (Tripura).

96. President,
Agra Iron Founders' Association,
88, North Vijay Nagar Colony,
Agra-282 004.

97. President,
Federation of Association of Cottage & Small Industries,
21-1-1, Greek Row,
Calcutta-700 014.

98. Smt. Aruna Galla,
M.D. Jaya Electronics,
H. No. 12, Tiruchanur Road, Padamvati Puram,
TIRUPATI-517520 (A.P.).

99. Shri B. Ramakrishna,
Bandar Road,
Vijayawada (A.P.).

100. Shri Chakradhari Agrawal,
Secretary General,
WASME, 27 Nehru Place,
New Delhi-110 019.

101. Shri Harjan Singh,
Multipore Filtration & Separation,
B-29, Kailash Colony,
New Delhi.

102. Shri Joginder Kumar,
President,
United Cycle & Parts Manufacturers Association,
Gill Road,
Ludhiana-141 003.

103. Shri K. L. Naniappa,
Ex-DCSSI, 96, Serpentine Road,
Kumarapark,
Bangalore-560 020.

104 Shri M. L. Bagri,
New Shri Sagar,
Doongersay Road,
Bombay-400 006.

105. Shri M. S. Parthasarathi,
President,
Small Industries & Business Entrepreneurs Association,
164, Mount Road,
Saidepet,
Madras.

106. Dr. Ram K. Vepa,
Ex-DCSSI, D-301, Som Vihar, Sector-XII,
R.K. Puram,
New Delhi-110 022.

MEMBER SECRETARY

107. Development Commissioner,
Small Scale Industries & Ex-Officio Additional
Secretary, Ministry of Industry,
Government of India,
New Delhi-110 011.

2. The function of the reconstituted Board will be to advise the Government on all policy matters relating to the development of small scale industries.

3. The Board will have powers to appoint Committee(s) for specific purpose, it shall also have powers to invite the persons to the meeting of the Board as and when necessary.

4. The terms of the Small Scale Industries Board shall be two years with effect from 1st April, 1989.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that a copy of the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

P. K. GOYAL
Director (SSI Board)

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI. 1989